मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ जूलाई २०१५ अंक, वर्ष २१, नं ६८, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

डॉ.कोटनाला के ग्रंथ 'साहित्य-भाषा-संस्कृति' का लोकार्पण प्रसिद्ध मलयाल-हिन्दी वक्ता श्री.तुंपमण तंकप्पनजी को प्रथम प्रति देते हुए करते हैं डॉ.टी.पी.श्रीनिवासन जी (पूर्व राजदूत)

डॉ.कोटनाला जी को अकादमी चेयरमेन पुरस्कार-पत्र दे रहे हैं।

विश्व हिन्दी सम्मान प्राप्त भारतीय विद्वान

डॉ.प्रभाकर श्रोत्रिय

डॉ.प्रभातकुमार भट्टाचार्य (उज्जैन)

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर (त्रिवेन्द्रम, केरल)

डॉ.मधु धवान (तमिलनाडु)

प्रो.माधुरी जगदीश छेड़ा (मुंबई)

प्रो.अनन्तराम त्रिपाठी (मुंबई)

कुमारी अहम कामै (मणिपूर)

डॉ.परमानंद पांचाल

डॉ.नागेश्वर सुन्दरम

प्रो.हरिराम मीणा

डॉ.व्यास मणि त्रिपाठी

डॉ.सुरेश कुमार गौतम (साहित्यकार)

श्री.आदित्य चौधरी (सलाहकार)

डॉ.के.के.अग्रवास (लेखक, चिकित्सक)

श्री.अन्नूकपूर (अपनी हिंदी शब्दों के जादू से बॉलिवुड में हिन्दी को नई पहचान दिलाई)

श्री.अरविंदकुमार (पत्रकार)

श्री.माताप्रसाद (अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल)

श्री.आनंद मिश्र अभय (शुद्ध एवं प्रांजल हिन्दी के पक्षाधर)

श्री.रामबहादुर राय (पत्रकार, संपादक, संवाददाता)

श्री.रामदरश मिश्र (उपन्यासकार)

विश्व हिन्दी सम्मान प्राप्त भारतेतर विद्वान

श्री.अनूपकुमार भार्गव (अमेरिका)

श्रीमति स्नेह ठाकुर (कनाडा)

प्रो.हाइंस वेर्नल वेसलर (जर्मनी)

डॉ.अकीरा ताकाहाशी (जापान)

प्रो.उषादेवी शुक्ला (दक्षिण अफ्रीका)

सुश्री कमला रामलखन (त्रिनिदाद एवं टाबैगो)

डॉ.दैमन्तास वलनचूनास (लिथुआनिया)

श्रीमति नीलम कुमारी (फिजी)

डॉ.सार्ज वर्बक (बैल्जियम)

श्री.अजामिल माताबदल (मॉरीशस)

श्री.गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल (मॉरीशस)

डॉ.इंदिरा गाज़िएवा (रूस)

सुश्री.दसनायक मुदियंसेलागे इन्द्राकुमारी दसनायक (श्रीलंका)

श्री.मोहम्मद इस्साईल (सउदी अरब)

श्री. सुरजन परोही (सूरीनाम)

श्री. कैलाशनाथ बुधवार (यू.के)

डॉ.उषाराजे सक्सेना (यू.के)

श्री.हाशिम दुर्रानी (ऑस्ट्रेलिया)

डॉ.इमरे बांगा (हंगरी)

डॉ.पी.जयरामन (अमेरिका)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ जूलाई २०१५ अंक, वर्ष २१, नं ६८ लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक

श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (काशी)
श्रीमती के. तुलसी देवी (चेन्नै)
श्रीमती रजनीसिंह
डा. मिनी सामुवल
डा. सविता प्रमोद
डा.सुशीलकुमार कोटनाला (उत्तराखण्ड)

परामर्श-मण्डल

डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम
श्रीमती श्रीदेवी एस.
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
श्रीमती रमा उण्णित्तान

सम्पादकीय कार्यालय

श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४
मूल्य-एक प्रतिः २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरखडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लखनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाखपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडुः- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरातः-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटकः-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्राः- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगालः-** कलक्कता। **हैदराबादः-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटीः-** कानपुरा। **नई दिल्लीः-** आर, के पुरम। गोवाः- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

keralahindisahityaacademy.com **www.drnchandrasekharannair.in**

सम्पादकीय

राष्ट्रभाषा हिन्दी को बचाइए

हम कई दफे लिख्र चुके हैं कि राष्ट्रभाषा हिन्दी की ज्वलंत समस्या का निवारण होना चाहिए। संविधान सभा में एक मत से नहीं, तो बहुमत से राष्ट्रभाषा की समस्या का निर्णय होना देश की इज्जत और संसार की दृष्टि में भारत का सम्मानित रहना अनिवार्य है। दुनिया के सभी स्वतंत्र देशों की अपनी एक राष्ट्रीय भाषा है। उसकी अवमति होना क्षम्य माना नहीं जा सकता। अनेक देशप्रेमी महान पुरुषों के कठोर प्रयत्न इस राष्ट्रभाषा के पीछे लगा है। महात्मा गाँधी उनमें सबसे आगे हैं। गुजराती भाषा के होने पर भी महात्मा की आत्मा हिन्दी भाषा की इज्जत और उन्नति से जुडी हुई थी। मगर स्वाधीन होने के इतने वर्षों के बाद भी संविधान ने जिस भाषा को उसकी ठीक मान्यता दी थी उसकी आज तक अवहेलना होती आ रही है। पारलिमेंट में कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो अपनी राष्ट्रभाषा को मान्यता नहीं देगा? एक अर्ध में वह इसका विरोध करता है तो वह देशप्रेमी नहीं कहा जा सकता। तब इसका नियम एकमत से होना संभव होगा। हमारा सख्त निर्देशन है एक दो महीनों के अन्तराल में संविधान में हिन्दी को, राष्ट्रभाषा को स्वतंत्र एवं निर्बाध रूप से, अंग्रेजी की मुठ्ठी से बचाकर प्रख्यापित करना चाहिए। नहीं तो हम भारत को स्वतंत्र मानेंगे नहीं। भाषा के नाम पर उसकी आज़ादी का पुनः आन्दोलन शुरु करना पडेगा। इसके लिए मरना भी हम अपने को श्रेयस्कर मानते हैं। प्रधानमंत्री विदेशों में कभी-कभी हिन्दी में बोलते है। धन्यवाद! उतना तो अच्छा है। पर हम उतने से प्रसन्न एवं देशसेवा अथवा देशरक्षा मान नहीं सकते।

मैंने मोदी सरकार के पदारोहण के दिन पर प्रधान मंत्री और सभी काबिनेट मंत्रियों को इस विषय पर पंचीकृत पत्र भेजे थे। प्रधानमंत्री के दफ्तर से मेरे पत्र की प्राप्ति सूचना भी मिली थी। पर इस के पश्चात् अपने कई लेखों, भाषणों, विश्वभाषा के समारोहों के संदर्भों में इस समस्या पर सख्त अभिमत प्रकट किया था। अब इस ओर जनसंपर्क एवं जन सहयोग से आन्दोलन करने पर सोचना पड़ रहा है। देश की अपनी भाषा को ठीक पद पर बिठाने केलिए आन्दोलन, उपवास एवं सत्याग्रह करने की बात को अपमान मानने का मनोभाव अधिकारी बर्ग समझ लें, यही मेरा विनम्र अनुरोध है।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

पुस्तक परिचय

सत्य-आदर्श-राम

विख्यात कवि एवं साहित्यकार डॉ.ताराचन्दपाल बेकल का तवीनतम भारी भटकम काव्य-ग्रंथ है सत्य-आदर्श-राम। ८३२ पृष्टोवाले प्रस्तुत काव्य में कवि के स्वतंत्र चिन्तन एवं पौराणिक राम-संकीर्तन का रोचक प्रतिपाद्य है। अपूर्व एवं नवीन उक्तियों का भरमार। पाठक अपने पूर्व परिचय से भगवान राम को देखना चाहेंगे, पर श्री. बेकल के राम का स्वरुप वर्णन और चरित्र वर्णन पाकर नवोन्मेष से पुलकित रह जायेंगे।

ताड़का वध के प्रसंग में:

"महर्षि बोले - सुनिए लक्ष्मण, राम
होशियारी से लेना काम
याजनाबद्ध तौर तरीका
कर पाए इसका काम तमाम।"

लगता है कि कवि बेकल ने अनेक रामायणों का अध्ययन किया है और उसका प्रत्यक्ष प्रमाण ग्रंथ में सर्वत्र निलता है और नये-नये प्रयोगों केलिए अवसर पा लेते है।

संक्षपे में सत्य-आदर्श राम हिन्दी साहित्य का एक श्रेष्ठ राम काव्य है जो संग्रहणीय है

- संपादकीय

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रकृति चित्रण

डॉ.पंडित बन्ने

प्रगतिवादी कविता धारा के कवियों की शृंखला में कवि केदारनाथ अग्रवाल अग्रणी कवि थे। कवि केदारनाथ अग्रवाल जी का जन्म १ अप्रैल 1911 में कमासिन, जिला-बांदा में हुआ। पिता का नाम हनुमान प्रसाद तथा माँ का नाम घसिट्टोदेवी था। शमशेर बहादुर सिंह केदारनाथ अग्रवाल को लेकर उचित ही टिप्पणी करते हैं - "केदार जिस खोज की तरफ बढ़ा है वह है, समाज का सत्य और प्रकृति का खुला नैसर्गिक सौंदर्य। अन्याय के खिलाफ और मेहनत के पक्ष में बेझिझक वह बोलता है। उसके व्यंग्य ने दोहरी-तिहरी धार नहीं, सीधी एक धार है। मगर वही बहुत काफी होती है।"

काव्यसंग्रह - युग की गंगा, नींद के बादल, लोक और अलोक, फूल नहीं रंग बोलते है, आग का आईना, गुलमेंहदी, पंख और पतवार, हे मेरी तुम, मार प्यार की थपे, रक्त स्नान, यह रचना, केदार खरी-खरी, जमुन जल तुम, अपूर्वा, बोल बोल अबोल, जो शिलाएँ तोड़ते हैं, आत्मगंध, अनहारी हरियाली, खुली बाँखे खुले डैने, पुष्पदीप, वसंत में प्रसन्न हुई पृथ्वी, कुहकी कोपल खड़े पेड की देह।

उपन्यास - पतिया; **यात्रा पृतांत** - बस्ती खिले गुलाबों की, एक यात्रा वृंतात; **पत्र साहित्य** - मित्र संवाद; **निबंध संग्रह** - समय समय पर, चिराबोध, विवेक विवेचन; **पुरस्कार** - सोवियत लैंड पुरस्कार (1973), उत्तर प्रदेश संस्थान का विशिष्ट पुरस्कार (1984), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1986), मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (1990)।

पंत की प्रकृति कोमल और ऐन्द्रजालिक है तो केदार की सहज, आलीय और किसानी। नाम और पलास पर दोनों कवियों ने लिखा है। एक में रुपरंग की बहार है तो दूसरे में वनंखड़ी दुल्हन बनी दिखाई देती है। बरगद, इमली, सेमल, धतूरा और बेल पर काई किसान कवि ही लिख सकता है। केदार बुंदकलखंड के जन-जीवन और प्रकृति के कवि हैं। लोक चेतना में पगी इस कवि की लेखनी ने चने के पौधे और बसंती हवा को सदा सदा के लिए अमर कर दिया है। चने का रुआब और हवा की शरारती चंचचला काव्य के पाठक के मन में बस जाते हैं। चंद्रगहना से लौटती बेर रास्ते में कवि चने के पौधे का यह ठाठ दिखाई पडा-

"एक बीते के बराबर, यह हरा ठिगना चना
बाँध मुरैग शीश पर, छोटे गुलाबी फूल का,
सज कर खड़ा है।"

अपने गाँव के बाहर के ढाक के जंगल में हिरणों की धमाचौकड़ी ने जहाँ कवि के मन में प्रकृति की जो अद्भुत गुदगुदी पैदा की, वहीं प्रकृति के चित्रों को जादुई कलम से रंग देने की अनुपम शैली भी कवि के भावप्रवण मन को उपहार में दे दी। प्रकृति चित्रण का एकल शब्दचित्र कवि की अपनी कविता वह चिडिया इस प्रकार होता है-

"वह चिड़िया जो, चोंच मार कर,
चढ़ा नदी का दिल टटोलकर, जल का मोती ले जाती है,
वह छोटी गरबीली चिडिया, नीले पंखों वाली मैं हूँ,
मुझे नदी से बहुत प्यार है।"

केदारनाथ की कविता में पहाड़, नदी और सूर्य बार-बार दिखाई देते हैं। उनकी कविता बुंदेलखंड की प्रकृति, वहाँ के जनजीवन तथा लोकगीत, लोकसंस्कृति, भाषा, लय और तान से घनिष्ठतम रूप से जुड़ी है। वहाँ का मनुष्य ही नहीं पानी भी कर्मठ है, बाधाओं से जूझता आगे बढ़ता है-

"तेजधार का कर्मठ पानी, चट्टानों के ऊपर चढ़कर,
मार रहा है घूँसे कमकर, तोड़ रहा है तट चट्टानी।"

कवि के समूचे सर्जक में प्रकृति का सौंदर्यबोध की अंतरंगता न केवल बेजोड़ है, बल्कि एक नये संदर्भों में भी कवि की काव्य प्रतिभा को द्योतित कराती है। इनके काव्य में प्रकृति की सन्निकटता के साथ-साथ सौंदर्यबोध के अनेक आयाम स्वयःर्स्फरत कविता के विषय बनते चले जाते हैं। जैसे-

"आज नदी बिल्कुल उदाम थी, सोई थी अपने पानी में
उसके दर्पण पर, बादल का वस्त्र पड़ा था,
मैंने उसको नहीं जगाया, दबे पाँव वापस घर आया।"

खेत-खलिहान के साथ-साथ उनकी कविताओं में घर आँगन भी दिखते हैं। सपाट, कँकरीले, पथरीले मैदान भी उन्हें अच्छे लगते हैं। परिवार की रागात्मकता को प्रकृति की विंबधर्मिता के साथ वे किस सहजता से कर देते हैं-

"धूप चमकती है चाँदी की साडी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है।"

डॉ.पंड़ित बन्ने को मानव संधान विकास मंत्रालय, भारत सरकार के एक लाख रूपये का पुरस्कार "डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के साहित्य में सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना" नामक ग्रंथ को प्राप्त हुआ।

लघुकथा

सामान्य ज्ञान

वी.गोविन्द शेनाय एम.ए., एल.एल.बी, पीएच.डी

चन्द्रभान आवास समुच्चय के प्रबंधक हैं और रघुराम चौकीदार जिसे रात की चौकीदारी सपुर्द है। रघुराम पैतीस साल का है और पत्नी शीलावती बत्तीस साल की। दम्पति निस्सन्तान है। शीलावती शहर के अस्पताल के जनाना वार्ड में सफाई का काम करती है। घर पर वृद्धा सास है जो गृहस्थी संभालने में योगदान करती है। विशेषज्ञ डाक्टरजी ने शीलावती को समझाया है कि उसके संतान होने की उम्मीद नहीं है। विवाह को इतने साल हो गये हैं और होना होता तो अब तक हो गया होता। जाँच, इलाज इत्यादि का व्यय उसके बूते की बात नहीं है। बात पत्नी ने पति से कही। रघुराम केलिए यह आघात गहरा ऐसा था कि वह काम पर ही नहीं गया, घर पर ही बैठा रहा, एकदम मौन, चिंतनरत तीन दिन ऐसे ही गुजरे। चौथे दिन आवास समत्ताय के प्रबंधक चन्द्रभानुजी स्वयं पूछताछ करने आये, रघुराम, पत्नी और माँ तीनों से बातें की। करुणा उभर आई, निदान सूझा। कहा विशेषज्ञ डाक्टर भी कहां सब कुछ जानता है! रघुराम, तुम अभी मेरे साथ आओ; दफ्तर के चपरासी का काम करो, दिन का काम, रात की चौकीदारी से अब तुम मुक्त हो। घर पर आराम से तद गुजार सकते हो। चौकीदार के वेतन से चपरासी का वेतन अधिक है। रघुराम ने बात मानी। प्रबंधक के साथ चला और चपरासी का काम ग्रहण किया। दिन गुज़रते गये और साल भी पूरा हुआ और दम्पति ने निरसंतान होने के अभिशाप से मुक्ति पाई। प्रबंधक चन्द्रभान विशेषज्ञ नहीं थे; परन्तु उन में सामान्यज्ञान भरपूर था। **रिट्टयेर्ड प्रिन्सिपाल, सौभाग्या, ओल्लूक्करा, त्रिच्चूर - ६८०६५५**

केदारनाथ अग्रवाल बाँदा के आसपास प्रवाहित होनेवाली केन नदी से वे अन्यधिक प्रभावित थे। उन्हें जब कभी भी अवसर मिलता तो वह गाँव के लोगों से मुलाकात करना नहीं भूलते थे और बाँदा के रमणीय स्थानों का पर्यटन भी यब यदा-कदा कर लिया करते थे। उनकी कविताओं में ग्राम्य जीवन की झलक बाँदा की अनुपम प्राकृतिक छटा से सराबोर होती थी। फूल नहीं रंग बोलते हैं कविता में कवि केदार कहते हैं-

"चोली फटी सरसों की, नीचे गिरा फागुनी लहँगा,
ऊपर उड़ी चुनरिया नीली, देख्रों हुई पहाड़ी विवसन।"

प्रकृति निरीक्षण में भी कवि शृंगारिकता और काम भाव से प्रेरित दिख्राई देता है। नदी उसकी नजर में एक नौजवान ढीठ लड़की है जो पहाड़ से मैदान में आयी है, जिसकी जाँघ ख्रुली और हँसी से भरी है, जिसने बला की सुंदरता पाई है। पेड़ नौजवान लड़कों की तरह उसे चूमते रहे हैं। नदी और कवि का आलिंगन सूर्य देख्र रहा है-

"तू भूलेगी मुझे, नितास्बिनी, स्तोतस्विनी,
जलधार से भरी नदी जिसने मुझ भेंट।
मैंने जिसे भेंट, सूर्य ने घंटो हमें देख्रा।"

केदार की कविता में पेड़, पौंधे, पक्षी, नदी, पोख्रर सभी अपने रूप रंग गंध के साथ मौजूद है। केदार जी गाँव के वसंत का वर्णन करते हुए ओहार का प्रयोग करते है जो दुल्हन को ले जाते समय डोली पर डाला जाता है। यहाँ पहाड़ फूलों की सजावट वाला ओहार ओढ़े है-

"पहाड़ ख्रडा है ओहार ओढ़े ओहार में
सुंथे हैं भरमार रंगभार फूल।"

चाँदी की साड़ी पहने मैंके में आयी बेटी की तरह मगन दिख्राई देती है। वह अपनी हमजोली सख्री फुली सरसों की छाती से लिपट गई है। प्रकृति चित्रम में लोक जीवन की छवि का प्रयोग कर केदार जी उसे सहज स्वाभाविक एवं सर्व संप्रेषणीय बना देते हैं। जैसे-

"धूप धरा पर उतरी, जैसे शिव के जटाजूट पर,
नभ से गंगा उतरी।"

जन-जीवन की समस्याओं से जुड़े इस कवि को प्रकृति का सौंदर्य जितना लुभाया था, उतना ही आकर्षित करता था उन्हें खेतों में हाड-तो मेहनत करता किसान और उसकी देह से ठपकता पसीना। साठ-सत्तर के दशक में किसानों की व्यथा पर लिख्री गई उनकी कविताएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। किसान तब भी हाड तोड़ मेहनत के बाद भूख्रे सोते और आज भी परिस्थितियों के आगे विवश होकर किसान आत्महत्या कर रहे हैं। कवि कहते हैं-

"मैंने उसको जब जब देख्रा लोहा देख्रा,
लोहा जैसे तपते देख्रा, गलते देख्रा,
ढलते देख्रा, मैंने उसको गोली जैसे चलते देख्रा।"

जनवादी कविताओं में प्रकृति-चित्रण, कहीं-न-कहीं वर्ग संघर्ष में सहायक बनकर ही प्रस्तुत हुआ है। केदार जी हृदय के सहज कवि है। अपने काव्य में उन्होंने नई संवेदनाओं को वाणी दी है। उनकी प्रकृति संबंधी कविताओं में भी जीवन के प्रति एक गहरा ममत्व प्राप्त होता है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. भाषा (पत्रिका) मई-जून, २०११ - सं.शशि भारद्वाज
२. समकालीन हिंदी के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर - डॉ.सजू प्रसाद मिश्र

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, भारत महाविद्यालय, जेऊर (म.रेल), तह-करमाला, जि-सोलापूर (महाराष्ट्र)

रिमझिम

डॉ.अमिताभ शंकर राय चौधरी

टन्...टन्...टन.... बज गयी घंटी...

छुट्टी...छुट्टी...छुट्टी...

हो-हो-हो - बच्चे भागे स्कूल गेट की ओर...

भारी भारी बैग लेकर कोई अपनी बस पर बैठ रहा है, तो कोई आटो पर। नजदीक रहनेवाले रिक्शे पर।

गर...गर...गर... बादल गरजने लगा..

टप्...टप्...पानी की बड़ी बड़ी बूँदें बच्चो पर... 'भागो-भागो..!'

पतिराम का लंबा सा स्कूल रिक्शा बगल में खड़ा था। नवजोत ने पीठ से बैग उतारा, उछोल कर फेंक दिया रिक्शे के अंदर...

'अरे इस तरह बैग फेंका जाता है?' पतिराम नाराज हो गये - 'इसमें विद्या है। इसकी इज्जत नहीं करोगे?'

'हाः! हाः! पानी बरस रहा है। आज मजा आ जायेगा, चचा'। नवजोत ने दोनों बाँहों को फुँला दिया... एक एक मुट्ठी में एक एक बूँद पकड़ने के लिए लगा उछलने...

खुली बटन, एक हाथ में वाटर बॉटल, दूसरे हाथ से टाई धूमाता हुआ उसका दोस्त देवज्योति भी आ पहुँचा। किसी तरह रिक्शे के अंदर बैग पटक कर बाहर कूद पड़ा - 'अरे पानी, बरसो पानी! नाचे टकला दादा, नानी'।

'टक्लो के सिर पर जब पानी की बूँदे गिरती हैं, तो उनको कैसा लगता होगा।'

दोनों खिलखिला कर हँस पड़े। बड़े नटखट हैं। पाँव एक जगह एक मिनट नहीं ठहरते। क्रिक्केट खेलते समय उनकी बॉल से किसी की खिड़की का काँच टूट जाये, तो वे डाँटते हैं - 'दुष्ट कहीं का'।

दोनों छुप छुप कर हँसते हैं।

पतिराम भी इनसे परेशान रहता है। स्कूल से लौटते समय रिक्शा पर बैठे बैठे दोनों दूसरी गाड़िओं के बच्चों से उलक्तने लगते हैं। कभी कागज का गोला बना कर किसी आँटो के अंदर फेंका, तो कभी हवाई जहाज बना कर उड़ा दिया। वह जा घुसा चौराहे पर खट्टी किसी स्कूल बस के अंदर। फिर अंदेर भी कौन माई का लाल चुप रहने वाला है? शुरु हो जाता है - घमासान!

तंग आकर पतिराम कभी कभी इनके डैडी म्मी के आगे हाथ जोड़ लेता है, 'साब, अब आप इन्हें दूसरी सवारी से भेजिए, मुक्तसे नहीं होगा। हर दिन का मुगड़ा टंटा'-।

'अरे पतिराम, तुम एल.के.जी. से इन बदमाशों को ले जा रहे हो। तुम जितना संभाल लोगे, और कोई थोड़े कर पायेगा'।

डैडी लोग कहते है, 'कस कर डॉट देना'।

दोनों मम्मी नाराज हो जाती हूँ।

अब रिक्शावाल भी हमारे बच्चों को डॉटेगा?

सभी बच्चे अपनी अपनी गाडी में बैठ चुके थे। टेम्पो का स्वर्रर... पीं पीं, बस का गुर्रर... भों भों, रिक्शे की ट्रिंग... ट्रिंग... चल पड़े सभी...

बारिस हो गयी मुसलधार। कल रात भर मजे में पानी बरसा था। सुबह रुका तो सब स्कूल पहूँचे। अब फिर से-

ऊबड़ खाबड़ सड़कों पर जगह जगह पानी जमने लगा। नाली तो बंद रहती ही है। और नगरपालिका ड्रेन की सौतेली माँ है। पानी जाये तो जाये कहाँ? शहर हो गया सरिता...

लो वो छोटी कार फंस गयी पानी में। बगल में खड़ी बस उसकी खिड़की पर काला काला धुआँ छोड़े जा रही है। घर्रर - घर्रर - । चौराहे पर जाम। कौन कैसे आगे बढ़े?

दैवज्योति ने जल्दी से कॉपी से पन्ना फाड़ कर एक नाव बना ली। नवजोत ने लपक कर उसे उठा लिया, और छोड़ दिया पानी में-

'अरे - रे - मेरी नाव - मेरी नाव-'। देवज्योति ने उसकी कॉलर पकड़ ली,

'तो क्या हुआ? देख्र, तेरी-नाव चल रही है कि नहीं- ?'

लड़किआँ खीं खीं करके मुँह पर रुमाल रख्र कर लगी हँसने,

क्लास थी की प्रियंका बोली, 'नवजोत, तुम बड़े नॉटी हो-'।

'नहीं मैं तो बहुत लंबा हूँ'- ।

हाजिर जबाबी से सभी हँसे पडे।

दोनों दोस्त क्लास फोर में हैं, एक ही कालोनी में रहते भी हैं। इसकी खुराफातों से सभी परेशान रहते हैं। कभी इसके दरवाजे की बेल बेवजह बजा कर भाग खड़े हुए। घर वाले बाहर निफ्ल कर 'कौन है? कौन है?' करते रह गये, तो कभी किसी के दरवाजे के सामने रखा दूध उठा कर दूसरे फ्लैट के सामने रख्र दिया, सुबह सुबह चाय में देर। घरवालों की । 'जरा भारतीजी से पूछना - उनके यहाँ दूध दे गया है कि नहीं? तो फिर हमारे पैकेट कहां गये?' ढूँढो! ढूँढो! आधे घंटे बाद गांगुली दादा के दरवाजे से 'दूधोद्धार' हुआ। तो चाय बनी, सभी समझ गये किसकी शरारत... है -।

एकाध बार तो दोनों मिलकर दूध पी गये और खाली पैकेट वहीं घोड़ दिया। चिन्हाटी।

घर में डॉट पड़ती है। कभी कभी पिटाई की नौबत आ जाती है। देवज्योति के पापा बनर्जी महाशय ठहरे मंगली। मुँफ्लाते रहते हैं - ठीक से पढ़ाई लिखाई नहीं करेगा, तो सर्विस कैसे मिलेगी? खायेगा क्या?

इस माथने में नवजोत के डैडी हरपाल निश्चिन्त है - 'अरे पुत्तर, पढ़ ले, सर्विस मिली तो ठीक है, वरना अपनी मोटर पार्टस के दुकान तो है ही'।

पतिराम भी दोनों से परेशान रहता है, स्कूल जाते समय तो इनकी शरारतों पर वाला पड़ा रहता है। वापसी में चौराहे पर रिख्शा रुका तो नवजोत चुपके से उतर गया। ज्यों पतिराम दो कदम आगे बढ़ा, देवज्योति लगा चिल्लाने, 'चचा, नवजोत पीछे छूट गया-"

'दुष्ट कहीं का। तुमलोगों को भूख भी नहीं लगती? जल्दी जल्दी घर नहीं जाना है - क्या?' पतिराम को रिख्शा रोक कर नवजोत का आसरा देखना पड़ता।

नन्हें दर्शक मजा ले लेकर हँसते...

आज लबालब बानी, उस पर इतने सारे बच्चे रिख्शे में। पतिराम से चलाते नहीं बन रहा था। बेचारे हाँफ रहा था। माथे का पसीना पानी में घुल घुल कर टपक रहा था। गले के दोनों बगल पेशियाँ उभर आयी - थीं। हैंडिल पर हाथ फिसल रहे थे-

खट्-खट्-खट्-पानी से निकल कर लोग स्कूटर पर किक मारे जा रहे थे।

पानी रुकने का नाम नहीं ले रहा था, अचानक खट्ट - रिक्शे का पिछला पहिया एक गड्ढे में जा गिरा। रिक्शा फँस गयी, पतिराम जी तोड़ कोशिश करके पैडिल मार रहा था, मगर गाड़ी एक इंच भी न आगे बढ़ी-

यू.के.जी. की पिंकी पिनचिन करते लगी, 'देल ही जायेगी, आज मेला बर्थडे है'।

'चुप!' नवजोत ने डाँटा, सीनिअर जो ठहरा, 'पतिराम चचा परेशान है, और तू है कि-'

देवज्योति ने चुपके से पूछा, 'पिंकी, मम्मी ने कौन सा केक मँगवाया है? प्लेन या चॉकोलेटवाला?'

पतिराम सीट से उतर कर हैंडिल को आगे छकेल रहा था। परंतु उसकी दशा कुरुक्षेत्र के मैदान में कर्च की तरह थी। रथ का पहिया जब धरती में धँस गया, तो कर्न उसे उठा ही न सका-

'चल-।' नवजोत ने यार की पीठ थपथपायी और कूद पड़ा।

प्रियंका, अलकनंदा, बगैरह नाक सिकोड़ने लगी, 'ऊँह - नंदे पानी में। छि:!'

देवज्योति ने चिल्लाकर कहा, चचा, हम पीछे से धकेल रहे हैं। तुम हैंडिल संभालो।

दोनों प्रेमचन्द के हीरा मोती की तरह छकेलने लगे। पतिराम ने भी पूरी ताकत लगा दी।

रिक्शा जरा सा हिल, फिर जस का तस-

नवजोत ने अकल से काम लिया, ए अभिनव, नीचे उतर। ज्यों हम रिक्शे को धकेलेंगे, तू फट से पहिये के पीछे एक ईंटा लगा देना.

कक्षा दो का इभिनव नीचे उतर आया, देवज्योति ने सड़के के किनारे से एक ईंट लाकर उसे थमा दिया।

फिर से...

'चलरे जवान, सीना तान! अब उठा ले वो आसमान-।'

पीछे से फिर दोनों बगल से छक्का-

पतिराम ने हैंडिल को आगे बढ़ाया - अभिनव ने छपाक से रख दी ईंट-

हो-ओ-ओ...

रिक्शा निकल आया,

'प्रियंका, हम लोगों का हाथ धुला दे -' वाटर बॉटल के पानी से सब हाथ धोने लगे।

पता नहीं क्यों परिताम ने दोनों का हाथ पकड़ कर छाती से लगा लिया, 'मेरे बच्चे -'

'क्या हुआ चाचा?'

आकाश पिघल पिघल कर इन पर चू रहा था...

पतिराम की आँखें चमक रही थीं - अलग से

सी.२६/३५-४०, रामकटोरा, वारणासी, यू.पी-२२१००१

प्राप्त पुस्तकें

१. सियासी कैट - बांक (गद्य) - श्याम हमराही लोआर परेल, मुंबई-४०००१३

२. सीखचो की पुकार (कविता संग्रह) पेरल, मुंबई-४०००१३

३. मन्नत्तु पद्मनाभन - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर (ट्रस्ट संस्करण, केरळ सरकार)

४. प्रश्नों की प्रतिध्वनि - राजेन्द्र परदेशी - सक्षात्कार संग्रह, परिंदे पुकारन नई दिल्ली-२

दुबई में सम्मानित हुए डॉ.यायावर

अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य कला मंच का ३०वाँ वार्षिक समारोह दुबई में आयोजित हुआ। जिसमें ६ जून को सरस्वती सभागार दुबई ग्राण्ड होटल दुबई में **डॉ.यायावर** को सम्मानित कर **"साहित्य श्री"** की मानद उपादि प्रदान की गयी।

अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य कला मंच का 30वाँ वार्षिक समारोह दुबई में 5 जून से 9 जून 2015 तक सम्पन्न हुआ। दुबई ग्राण्ड होटल दुबई में सम्पन्न हुए इस भव्य समारोह में विश्व-पटल पर हिन्दी विषय पर संगोष्ठी हुई जिसका सफल संचालन डॉ.रामसनेही लाल शर्मा यायावर ने किया। संगोष्ठी में बारत के 10 प्रदेशों और 6 अन्य देशों के प्रतिनिधियों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए और हिन्दी को आने वाले भविष्य की मुख्य बाषा बताया। दुबई से डॉ.पूर्णिमा वर्मन मुख्य अतिथि रहीं। अध्यक्षता डॉ.रामअवतार शर्मा ने की विशिष्ट अतिथि अमेरिका के प्राण जगगी और मेजर शेर बहादुर सिंह रहे। डॉ. त्रिलोनाथ सिंह दुबई मुख्य वक्ता थे। 6 जून को मंच के संस्थापक अध्यक्ष डॉ.महेश दिवाकर के संचालन में आयोजित सम्मान समारोह में विभिन्न साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। डॉ. यायावर को उनकी साहित्य-साधना के उपलक्ष्य में **"साहित्य श्री"** की मानद उपाधि प्रदान कर उत्तरीय रुद्राक्ष व स्फटिक माला और अति भव्य अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में हिन्दी उत्थान के लिए परिचर्चायें, कवि सम्मेलन, कवि गोष्ठियाँ भी आयोजित हुईं। स्मरणीय है कि डॉ. यायवर की 21 मौलिक कृतियाँ तथा 10 सम्पादित कृतियाँ प्रकाशित हैं। 100 कृतियों में उनकी लेखकीय सहभागिता है। हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार और उत्थान हेतु यह उनकी चौथी विदेश-यात्रा है। इससे पूर्व वे नेपाल, बहरीन, सिंगापुर की यात्र कर चुके हैं। उनकी ४ कृतियाँ इस समय प्रकाशनाधीन हैं।

डॉ.रामसनेहीलाल शर्मा,यायावर,
डी.लिट., 86, तिलकनगर, बाईपास रोड, फीरोजाबाद-283203

गीत

सुरेन्द्र गुप्त सीकर
४३, नौबस्ता, हमीरपुर रोड, कानपुर-२०८ ०२१ (उ.प्र.)

कवि कुछ ऐसा तो लिख जाओ
जो प्रबोध को प्रसार दे दे ।।
जो समष्टि को सँवार दे अरु।
जो प्रसून को निखार दे दे ।।

नीति, शान्ति और स्नेह के पावन।
पाथर रख दे जो घाटों पर ।।
पिस न सके जो कवि कबीर-सा।
चलती चाकी के पाटों पर।।

ऐसा ठोस कि जो विकास-हित,
जन-जन को नव विचार दे दे।।
कवि कुछ ऐसा तो लिख जाओ...

हो विमुक्त जो भेद - भाव से।
निज-पर की सीमा से परे हो।।
अभिनव जल-प्रपात सा निर्मल।
धर्म-धुरी की धार धरे हो।।

जो विशिष्ट हो, जो पवित्र हो,
जो उदात्त को उभार दे दे।।
कवि कुछ ऐसा तो लिख जाओ.....

जो भी लिखें हम सोच-समझ कर।
आत्मा से हो वह साक्षात्कृत।।
मंगल संदेशा धारित हो।
प्रतिपालक अरु प्राणाधरित।।

दुःख-विनाशक, अनिष्ट-नाशक,
तप्त हृदय को तुषार दे दे।।
कवि कुछ ऐसा तो लिख जाओ....

स्वर-व्यंजन-युत शब्द-समूहों-
का सविनय सुन्दर सम्मेलन।।
भावों का संवेदनाओं का-
हो संयम सँग, शुभ आमेलन।।

जो विशिष्ट को भी समष्टि से,
सिन्धु-सन्धि-हित कगार दे दे।।
कवि कुछ ऐसा तो लिख जाओ...

सुधियों के सूने गगन में चाह हो।
रास्ता होकर निकलता चाँद से।।

द्वैत भावों का मिलन तो व्यर्थ है।
स्वार्थयुत साधना का क्या अर्थ है।।
त्याग हो उल्लासमय निज चरम पर।
मन-हृदय संयुक्त मिलन अभ्यर्थ हो।।
कई जन्मों का दहकता दाह हो।
रास्ता होकर निकलता चाँद से।।

सेतु है विश्वास का यह प्रेम तो।
मिलन है उच्छवास का यह प्रेम तो।।
भान रह जाये न दूर व पास का।
भय व सीमा से परे यह प्रेम तो।।
प्रेम-निर्झर बह रहा जिस राह से।
रास्ता होकर निकलता चाँद से।।

तुम मिटा दो अहं अपना और मेरा।
कुहासों का यह घना धूमिल अँधेरा।।
तेरे-मेरे भाव हो जायें तिरोहित।
खिल उठेगा हृदय विच स्वर्णिम सवेरा।।
हर छुअन में एक मीठी आह हो
रास्ता होकर निकलता चाँद से।।

वाटिका में सुमनःछवि छायी हुयी हो।
सुवासित अमराई बौराई हुई हो।।
कोकिला की कूक से उल्लसित होकर।
सोंधी सुधियों ने सुगँध पाई हुई हो।।
साध, रामायण की बहती नाव हो।
रास्ता होकर निकलता चाँद से।। •

विश्व हिन्दी दिवस समारोह

१० जनवरी २०१६ इतवार को दो बजे से विश्व हिन्दी दिवस, समारोह विश्राम भवन केशवदासपुरम में संपन्न हुआ। श्रीमती राजपुष्पम की प्रार्थना के साथ सभा की शुरुआत हुई। डॉ.पी.लता ने (मंत्री, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी) सदस्यों का स्वागत किया।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की अध्यक्षता में सभा कार्य हुआ। सबसे पहले श्रीमती शारदा देवी (डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की धर्मपत्नी) की श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गयीं। डॉ.तंकमणी अम्मा जो शारदा जी से अटूर नाता रखती है उनके जीवन मूल्यों के बारे मे सविस्तार भाषण दिया। उनकी राय में ऐसी स्नेहमयी बहुत विरले ही देखने को मिलती है। हँस मुख के बिना उनसे मिलना मुश्किल है। उन्होंने डॉ.नायर जी और अकादमी की खूब सेवा की। अकादमी की देखभाल करने में सदा जागरुक थी। डॉ.नायर जी की धर्मपत्नी होने से हिन्दी के प्रति अगाध ममता भी थी। उसके बाद राजपुष्पमजी ने बड़ी बहन सी शारदा देवी पर लिखी कविता पारायण भी किया। दो मिनट तक मौनाचरण किया तथा दीप जलाकर पुष्पार्चना भी की गई। वास्तव में उनका निधन अकादमी केलिए बड़ा नष्ट ही है।

इसके बाद उद्घाटन कार्य श्री.टी.पी.श्रीनिवास ऐ.एफ.एस. द्वारा किया गया। उन्होंने विश्व हिन्दी के बारे में अपना मत इस प्रकार प्रकट किए कि हिन्दी भारतीय संस्कृति की उद्घोषणा करनेवाली भाषा है। स्वंतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने उसे भारत की राष्ट्रभाषा घोषित किया। हिन्दी पहले से ही भारत की संपर्क भाषा रही थी स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत संघ की राष्ट्रभाषा के पद पर हिन्दी प्रतिष्ठित हो गयी। अब तो विश्व भाषा बन गई। विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा के रुप में हिन्दी को मान्यता मिली है। विश्व हिन्दी सम्मेलनों ने उसके गौरव को बढाया है। अब तो भारतवासियों को चाहिए कि वे अपनी भाषा को राजभाषा के रुप में पूरी तरह प्रतिष्ठित करें।

अध्यक्षीय भाषण में डॉ.नायर जी ने कहा कि लोकराष्ट्रों में भारत आज एक स्वतंत्र स्वाधीन राष्ट्र है। आज अपनी स्वतंत्र आविष्कृति की प्रगति के कारण ही भारत समुन्नत देशों की गणना में है। सारी दुनिया में हिन्दी का विकास इतना हुआ है कि दुनिया में सातवीं भाषा के रुप में हिन्दी भाषा को स्थान प्राप्त है। उन्होंने यह निर्देश भी दिया है कि हिन्दी को जल्दी ही राजभाषा बनना आवश्यक है।

इसके बाद ग्रंथों का लोकार्पण हुआ। पहला ग्रंथ चन्द्रशेखरन नायर का जीवन एवं साहित्य ग्रंथ की प्रथम प्रति टी.पी.श्रीनिवासन जी ने डॉ.तंकमणि अम्मा को देते हुए किया था। डॉ.तंकमणि अम्मा ने सविस्तार ग्रंथ परिचय दिया। श्री.सुशीलकुमार कोटनाला ने ग्रंथकार की खूब प्रशंसा भी की।

फिर डॉ.लता जी ने "विश्व भाषा के रुप में हिन्दी" आलेख प्रस्तुति की। तमाम विश्व में हिन्दी भाषा के बढ़ते प्रभाव और प्रचार-प्रसार को मद्देनज़र रख कर सन् १९७५ में नागपुर में संपन्न हुए प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी को विश्वभाषा का स्थान दिलाने का प्रस्ताव पारित हुआ था। आज यह देखा जा सकता है कि विश्व के अधिकांश देशों में हिन्दी भाषा किसी न किसी प्रकार प्रवेश कर गयी है। मॉरीशस, फीजी, त्रिनिदाद, सुरीनाम, गयाना जैसे देशों में जहाँ आप्रवासी भारतीयों की संख्या ज्यादा है, हिन्दी का खूब प्रचार है। खाड़ी देशों में रहनेवाले भिन्न-भिन्न भाषा भाषियों के बीच हिन्दी संपर्क भाषा की भूमिका निभाती है। भूमंडलीकरण, बाज़ारवाद, व्यापारवाद आदि ने भी हिन्दी को काफी बढावा दिया है। जर्मन, चीनी, फ्रांसीसी कंपनियों ने हिन्दी के महत्व को पहचाना है। अमेरिका की सरकार भी हिन्दी सीखने-सिखाने पर करोड़ों डॉलर खर्च करती है। भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद ने विश्व के कई देशों में भारत विद्यापीठों की स्थापना की है जहाँ हिन्दी अध्ययन-अध्यापन की सुविधा है। हिन्दी फिल्मों, फिल्मीगीतों, टी.वी.चानल आदि ने भी वैश्विक स्तर पर हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ाया है। अब भारत सरकार की ओर से हिन्दी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा बनाने का प्रयास चल रहा है। फिलहाल संयुक्त राष्ट्रसंघ की छह आदिकारिक भाषाएँ हैं - चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रुसी, स्पेनिश तथा अरबी। सातवीं भाषा के रुप में हिन्दी भाषा को स्थान प्राप्त होने पर सही अर्थों में हिन्दी विश्व-भाषा के पद पर प्रतिष्ठापित हो जाएगी।

द्वितीय ग्रंथ केरल भाषा साहित्य और संस्कृति का परिचय श्री. तुंपमण तंकप्पन ने किया। उन्होंने कोटनाला जो उत्तर खांड से आए केरल प्रेमी की मुक्तकंठ प्रशंसा की।

इसके बाद अकादमी के अध्यक्ष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी ने कोटनाला जी का अभिनंदन करते हुए उनकी साहित्य श्रेष्ठता का महत्व

आया को माँ समझने वाले भ्रम के शिकार ! बद्री नारायण तिवारी

"मैं ऐसे प्रान्त का हूं जिसका अपना इतिहास है और उस इतिहास पर मुझे शर्म लगने का कोई कारण नहीं है। मेरी भाषा में ऐसा साहित्य है जिसका मुझे अभिमान है। इतना होते हुए भी जाहिर करना चाहता हूँ कि समूचे हिन्दुस्तान की एक ही राजभाषा होनी चाहिए। उसके लिये मेरी भाषा का बलिदान करने के लिये तैयार हूँ। वरना हमारी अखिल भारतीयता की बातें खोखली ही ठहरेंगी।"

ये शब्द डॉ.भीमराव अम्बेडकर ने दिल्ली की संविधान सभा के भाषण के कुछ अंश हैं। उनकी मातृभाषा मराठी थी और बैरिस्टर बने थे लंदन से। राष्ट्रीय एकता की पृष्ठभूमि में भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में बाबा साहब अम्बेडकर ने हिन्दी को ही प्राथमिकता दी।

देश की आज़ादी में संघर्ष की प्रेरणादायी भाषा हिन्दी थी और अंग्रेजों भारत छोडो , साइमन कमीशन वापस जाओ, जयहिन्द, दिल्ली चलो, वंदेमातरम, करो या मरो, इन्कलाब जिन्दाबाद आदि सभी नारे हिन्दी में गूंजे। बंगाली भाषा के नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जिन्होंने आजाद हिन्द फौज का गठन किया। इसका सैन्य प्रयाम गीत-"कदम-कदम बढाये जा खुशी के गीत गाए जा, ये जिन्दगी है कौम की तू कौम पे मिटाये जा" हिन्दी में ही था। विदेश से भारतवासियों को पहला रेडियो संदेश भी हिन्दी में ही नेताजी ने दिया था।

अमर शहीद भगत सिंह ने सन् 1924 में पूछा था कि बंगाली भाषी, मराठी भाषी, तमिल भाषी और पंजाबी भाषी किस भाषा में परस्पर वार्ता करेगे, क्या सात समुंदर पार की भाषा अंग्रेजी में? कदापि नहीं! हिन्दी में सभी भाई बात करेंगे।

राष्ट्रपति बाबू डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अंग्रेजी की दासता से मुक्ति के बिना आज़ादी को अधूरी मानते थे। संविधान निर्माता डॉ.अम्बेडकर मराठी भाषी थे और हिन्दी को देश की राजभाषा बनाने का प्रस्ताव तमिल भाषी श्री. गोपाला स्वामी आयंगार ने प्रस्तुत किया था। संविधान के अनुसार हिन्दी देश की राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित भी हुई किन्तु आज तक अंग्रेजी का वर्चस्व पूर्ववत बना हुआ है जो अंग्रेजी मानसिक दासता से ग्रस्त है।

अंग्रेजी के पक्ष में कहा जाता है कि इसके बिना राजकाज पूर्ण रूप से गूंगा हो जाएगा, तर्क दिया जाता है कि अंग्रेजी के बिना तकनीकी एवं विज्ञान का ज्ञान असंभव है। लेकिन प्रश्न उठता है कि क्या जिन देशों में अंग्रेजी नहीं है वहाँ शासकीय कार्य तथा ज्ञान-विज्ञान संभव हीं हो रहा है। क्या जापान-चीन देशों में अंग्रेजी नहीं है, वहाँ शासकीय कार्य तथा ज्ञान-विज्ञान संभव नहीं हो रहा है। क्या जापान-चीन के तकनीकी का विकास का आधार अंग्रेजी है? सभी जानते हैं कि जर्मनी में बहुमुखी विकास चाहे ज्ञान का हो या विज्ञापन क्षेत्र में जर्मन भाषा के माध्यम से ही किया। रूस या फ्रांस ने विश्व में अपना स्थान अपनी भाषा में बनाया। यदि मिसाइल को प्रक्षेपास्त्र कहा जाये तो उसकी क्या मारक क्षमता घट जायेगी? रूस, फ्रांस, चीन, जर्मनी, जापान, इजरायल तथा भारत से मिले हुए देश नेपाल अपने देश की भाषा में ही न्यायपालिका में निर्णय तथा कार्यवाही करते हैं।

हिन्दी को समाप्त करने का अंग्रेजी शासनकाल में एक ऐसा षड़यंत्र चला था जिसमें रोमन का प्रचलन करके हिन्दी की वैज्ञानिक नागरी लिपि समाप्त की जा सके। जब वे इस षड़यंत्र में पस्त हो गए तो उन्होंने हिन्दी बोलियों को ढाल बनाकर अंग्रेजी के वर्चस्व को बढ़ाने का आन्तरिक षड़यंत्र शुरू कर दिया।

वस्तुतः हिन्दी की सभी आंचलिक बोलियों का साहित्य ही हिन्दी भाषा का श्रंगार है। इसी के द्वारा हिन्दी के शब्द भण्डार की अभिवृद्धि हुई है। हिन्दी के युग निर्माता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अंग्रेजी की इस कूटनीतिक चाल को दूर दृष्टि से देखते हुये सभी बोलियो

बताते हुए उन्हें २१,००० रुपये का साहित्य पुरस्कार दिया।

सुशील कुमार कोटनाला जी अपने जवाबी भाषण में केरल हिन्दी साहित्य अकादमी और अध्यक्ष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की खूब प्रशंसा की। क्योंकि ९३ उम्रवाले साहित्यकार नव पीढ़ी केलिए प्रेरणा ही है। उनकी कृतियों की स्तुति की। नायर जी और केरल प्रकृति के बारे में खूब गुणगान गाया था। केरल की भाषा साहित्य और संस्कृति उन्हें आकर्षित कर दिये थे। इस सुन्दर रमणीय देश भारत का ही अंग होने से उन्हें नाज़ है। लोगों के अनैक्य के बारे में उन्होंने उँगली उठाई। उन्होंने केरल के बारे में लिखी कविता भी सुनाई।

सभा का संचालन और कृतज्ञता ज्ञापन डॉ.रंजिता राणी ने किया था। सभा में उपस्थित सब लोगों को चाय सत्कार की व्यवस्था की गई थी। राष्ट्रगीत के बाद सभा की परिसमाप्ति हुई।

"जय हिन्दी जय हिन्दी।"

मंत्री, के.हि.सा.अकादमी

के शब्दों के प्रयोग के आधार पर हिन्दी को खड़ी बोली नाम से प्रचारित किया। हिन्दी की ऐतिहासिक पत्रिका सरस्वती जिसके आचार्य द्विवेदी दशकों सम्पादक रहकर हिन्दी खड़ी बोली स्थापित कर वह ऐतिहासिक पुरुष बने। इसी को गति प्रदान करने में सरस्वती के सम्पादक होकर पद्मविभूषण पं. श्री.नारायण चतुर्वेदी ने अंग्रेजी के बोलियों को बढ़ावा देकर हिन्दी के विरुद्ध षड़यंत्र का पुरजोर विरोध करने में महत्वपूर्ण योगदान किया।

स्वतंत्र भारत में हिन्दी की दशा के सम्बन्ध में अधिक न कहकर पद्मविभूषण डॉ.विद्या निवास मिश्र के शब्द यहाँ उद्धत करनका चाहता हूँ:-

'हिन्दी के पक्ष में' कुछ भी कहें, संकीर्णता है, विरोध में कुछ कहे, उदारता है। 'साहित्य अकादमी से आवाज' उठनी शुरू हुई-हिन्दी अनेक भाषाओं में एक है। किसी कोने से यह भी आवाज उठी कि हिन्दी कोई भाषा नहीं है। हिन्दी साहित्य अकादमी का 'एक बटा बाइस' है। राजकाज का जहाँ तक सवाल है, वहाँ आँकडों के घर में दूसरा हिसाब मिलेगा और व्यवहार में दूसरा। हिन्दी क्षेत्र में चलती थी, अंग्रेजी में चलने लगी है। केन्द्र का अधिनियम जो कुछ कहती हो, 'क' क्षेत्र के राज्यों में भी हिन्दी में पत्र व्यवहार नहीं होता। कहने को हिन्दी विकल्प रूप में ख और 'ग' में भी है, पर वहां भी अंग्रेजी की निर्विकल्प समाधि लगी हुई है। अंग्रेजी की पढ़ाई अब शहर की गली-गली कौन कहूँ, गाँव-गाँव में होने लगी है। ऐसा लग रहा है कि भारत के सौ में से निन्यावें से अधिक प्रतिशत आदमी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में नौकरी पायेंगे, विदेशों में जाएँगे, दूतवासों में जाएँगे और अंग्रेजी ही उन्हें पार लगा देगी। अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने का मैकाले का स्वप्न अंग्रेजी राज्य में पूरा नहीं हुआ, अब पूरा होगा। इंग्लैण्ड में ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी मेकं प्रतिवर्ष हिन्दी शब्दों को क्यों सम्बद्ध कर रहे हैं। सभी क्षेत्रों हिन्दी ने विकास किया किन्तु उसका उपयोग नकारते हुये उसी पर झूठे आरोप लगाए जाते हैं।

प्रसन्नता की बात है इस समय हिन्दी भाषी क्षेत्र के युवकों ने प्रतियोगी परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करके अंग्रेजी के किले में सेंध लगाई है। अंग्रेजी परस्त वर्ग आश्चर्यचकित है। देश के हिन्दी भाषा प्रान्तों से संबंधित इन युवकों ने जो संदेश दिया है उसका सारतत्व यह है कि संसाधनों के अभाव का दोष भाषा कर नहीं थोपा जा सकता। 'आया' को 'माँ' समझने वाले वस्तुतः भ्रम के शिकार है। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव श्री मून ने सभी राष्ट्रों को सर्वप्रथम हिन्दी में सम्बोधन करके उसकी महत्ता को समझा कि चीनी के बाद संसार में बोली और समझी जाने वाली दूसरी भाषा हिन्दी है। अभी प्रत्यक्ष प्रधान मंत्री मोदी के अमेरिकी, जापान, आस्ट्रेलिया जैसे देशों में हिन्दी संबोधन को करोडो लोगों ने वहाँ के लोगों को बोलने के बीच में तालियों से कई बार समर्थन करते देखा है। जापान में जापानी बालिकाओं के सामूहिक बंदेमातरम प्रभावशाली गायन में मोदी जी ने भी साथ दिया था।

महीयसी महादेवी वर्मा ने इसलिये कहा राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अंधकारमय हो जायेगा। दूरदर्शी पत्रकार अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी ने सन् 1929 के गोरखपुर हिन्दी साहित्य सम्मेळन के अधिवेशन में घोषणा की थी कि एक दिन हिन्दी एशिया नहीं विश्व पंचायत में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। इसका प्रमाण है जो 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस में आयोजित होने लगे। हिन्दी सिनेमा बालीउड संसार में हालीउड के बाद दूसरे स्थान पर है। वालीउड तथा हिन्दी चैनेल अरबों रुपये की कमाई भी दे रहा है। 36 भाषाओं के विद्धान विश्वयायवर महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी को विश्व की महान भाषा कहते हुये उसे मान्यता दी है। अंग्रेज भाषा वैज्ञानिक हिन्दी विद्धान डॉ. ग्रियर्सन के अनुसार हिन्दी ही एक भाषा है, जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है। रुस के प्रमुख कवि एवं रामचरितमानस के रुसी पद्यानुवाद करने में सर्वोच्च सम्मान 'आर्डर ऑफ लेनिन' प्राप्त वारास्त्रिकोव की मान्यतानुसार जो लोग हिन्दी को एक कठिन मानते हैं, वे हिन्दी से परिचित नहीं है। योरोपीय हिन्दी विद्धान रेवेरेण्ड फादर डॉ. कामिल बुल्के ने हिन्दी प्रेम के कारण बेल्जियम (स्वदेश) की नागरिकता त्याग कर भारतीयता नागरिकता ले जीवन पर्यन्त भारत में रहे। डॉ.बुल्के के कथनानुसार "संस्कृत माँ, हिन्दी गृहणी और अंग्रेजी नौकरानी है।" नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के अनुसार - "देश के सबसे बडे भू - भाग में बोली जानी वाली भाषा हिन्दी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।" इस गम्भीरतापूर्वक अतीत की उक्तियों पर वर्तमान समय देश के बहुमुखी विकास में महत्वपूर्ण योगदान होगा। सम्पादक एवं सशक्त रचना कर श्री. आनन्द शर्मा की रेखांकित पंक्तियां हिन्दी विकास की ओर स्पष्ट संकेत कर रही है-

..... कश्मीर से कन्याकुमारी तक, सभी जाति धर्म के लोगों को बांधोगी एकता के सूत्र में, हिन्दी की बिन्दी जगमाएगी। गहरा है अंधेरा मगर, दूर मुझे जाना है।

बुझे हुये दीयों को जलाकर, रोशनी को इधर लाना है। अन्ततः रचनाकार की प्रस्तुत पंक्तियां जिस यथार्थ को व्यक्त कर रही है, जितनी माता और मातृभूमि से सम्बद्धता होती है-

सुन्दर होंगे देश बहुत से, बहुत बड़ी है यह धरती।
पर अपनी माँ अपनी ही है, अमित प्यार जो करती है।

मानस संगम, महाराज प्रयाग नारायण मन्दिर,
शिवाला, कानपुर-२०८००१

माता नामक अद्‌भुत प्राणी

സംഗ്രഹകർത്താ:
ജസ്റ്റിസ് എം. ആർ. ഹരിഹരൻനായർ

പ്രഭാതത്തിൽ അടുക്കളയിലെ പാത്രങ്ങളോടും തവിക ളോടുമൊക്കെ സംസാരിക്കുന്ന ഒരു ജീവനുണ്ട് വീട്ടിൽ..

വീളമ്പിക്കൊടുത്ത് തനിക്ക് തികയാതെ വരുമ്പോൾ എനിക്കിത് ഇഷ്ട മല്ലെന്നോതി വീതിച്ച് കൊടുക്കുന്ന ഒരു ജന്മമുണ്ട് വീട്ടിൽ...

പരിഭവങ്ങളില്ലാതെ... പവിത്രമായൊരു പ്രണയം പറഞ്ഞുതന്ന ഒരു നനഞ്ഞ പൂവുണ്ട് വീട്ടിൽ...!!!

മുറ്റത്തെ ചെടികളുടേയും.... തൊടിയിലെ ചെറു മരങ്ങളുടേയും ദാഹം തീർക്കുന്ന കർഷകശ്രീ അവാർഡ് കിട്ടാത്ത ഒരു മഹിളയുണ്ട് വീട്ടിൽ.

മക്കളും... ഭർത്താവും... വീടും ഉറങ്ങിയതിനുശേഷം ഉറങ്ങി... അലാറം അടിക്കുംമുന്നേ ഉണരുന്നഒരു ശരീരമുണ്ട് വീട്ടിൽ...

അടുക്കളയയിലെ ചൂടും.... ചൂരും നുകർന്ന് സ്വയം ശുദ്ധവായു ശ്വസി ക്കാൻ മറന്ന ഒരു മറവിക്കാരിയുണ്ട് വീട്ടിൽ...

പുറത്ത് പോയവർ വീടണയുംവരെ ഉള്ളിൽ തീ നിറച്ച് തേങ്ങലോടെ കാത്തിരിക്കുന്ന ഒരു ഹൃദയമുണ്ട് വീട്ടിൽ...

ദൈവത്തിനോടുള്ള സ്വകാര്യം പറച്ചലിൽ സ്വന്തം പേര് പറയാൻ മറന്നുപോയൊരു മഹിളയുണ്ടാ വീട്ടിൽ....

സമാധാനത്തിനുള്ള നോബൽ സമ്മാനം ലഭിക്കാതെ പോയ മദർ തെരേസയുണ്ട് വീട്ടിൽ...

പത്രാസ് കാണിക്കാൻ മറന്നുപോയൊരു നിലവിളക്കുണ്ട് വീട്ടിൽ...

സ്വയം ശ്രദ്ധിക്കാൻ മറന്ന്.... വീട്ടിലുതള്ളവരെ പരിപോഷിപ്പിച്ച്... എല്ലും തോലുമായ ഒരു നനഞ്ഞ ജീവനുണ്ട് വീട്ടിൽ...

ഭംഗി ഇല്ലാത്തോണ്ടാവണം പ്രോഗ്രസ് കാർഡ് ഒപ്പുവയ്ക്കാൻ പപ്പ വന്നാ മതി എന്ന് മക്കൾ പറയുമ്പോൾ കണ്ണാടിനോക്കി സ്വയം കര യുന്നൊരു പാവമുണ്ട് വീട്ടിൽ...

മകൻ യാത്ര പറഞ്ഞ് പടികളിറങ്ങുമ്പോൾ മറ്റൊരു പ്രസവവേദന അനുഭവിക്കുന്ന മാലാഖയുണ്ട് വീട്ടിൽ...

ഒടുവിലാ സാഗരം കളമൊഴിയുമ്പോൾ... കരയുന്നൊരു വീടും... വാടിത്തളർന്ന പൂവകളും പറയും... അമ്മയില്ലാത്തൊരു വീട്... വീടേ അല്ലെന്ന്... (ദൈവം തമ്പുരാൻ നമ്മുടെ മാതാപിതാക്കൾക്ക് ദീർഘാ യുസ്സു നല്കിയനുഗ്രഹിക്കട്ടെ! നനഞ്ഞ പ്രാർത്ഥനയോടെ....)

ഏറ്റവും മികച്ച് കോടതിയാണ് അച്ഛൻ പക്ഷേ ആ കോടതിയിലെ എത്ര വലിയ വിധികളെയും മാറ്റിയെഴുതിക്കാൻ കഴിവുള്ള ഒരു വക്കീലുണ്ട്. അതാണ് അമ്മ.

കളിക്കിടെ വീണുമുറിഞ്ഞ കാൽമുട്ടിൽ പച്ചയിലയരച്ച് മരുന്നാക്കി കെട്ടിത്തന്ന അമ്മയാണ് ഞാൻ കണ്ട ആദ്യത്തെ ഡോക്ടർ.

പൊട്ടിത്തകരുന്ന എൻ കളിപ്പാട്ടങ്ങളെ നേരെയാക്കി തരാറുള്ള അമ്മ യാണ് ഞാൻ കണ്ട ആദ്യത്തെ എഞ്ചിനീയർ...

അച്ഛന്റെ ശിക്ഷയിൽ നിന്ന് വാദിച്ച് എന്നെ രക്ഷപ്പെടുത്താറുള്ള അമ്മ തന്നെയാണ് ഞാൻ കണ്ട് ആദ്യത്തെ വക്കീൽ.

അമ്മ ഒരു പാഠമല്ല. അനേകായിരം പാഠങ്ങളുള്ള ഒരു വിശുദ്ധ ഗ്രന്ഥമാണ്! മനസ്സിൽ നന്മ മാത്രമുള്ള മക്കൾക്ക് മാത്രം വായി ക്കാൻ കഴിയുന്ന വിശുദ്ധഗ्रന്ഥം.

घर में एक प्राणी है जो प्रभात में रसोई घर के बर्तनों और कलछियों से मधुर वार्तालाप करती है।

घर में एक प्राणी है जो खाना सबको परोस कर अपनेलिए न पाकर कहती है मुझे यह अच्छी नहीं लगती।

घर में एक महिला है जो आँगन के पौधों की प्यास बुझाती है चाहे उसे कर्षकश्री अवार्ड न मिला हो।

घर में एक शरीर है जो बच्चों एवं पति के सो जाने के बाद सोता है और अलारम के बजने के पहले ही उठ जाती है।

घर में एक भुलक्कड है जो रसोई घर की गर्मी की उग्रता को सहकर शुद्ध हवा लेना भूल जाती है।

घर में एक हृदय है जो बाहर गए हुए घरवाले के वापस आने तक व्यग्रता के साथ रहता है।

घर में एक महिला है जो ईश्वर से प्रार्थना करते समय अपनी बात भूल जाती है।

घर में एक मदर तेरेसा है जो शांति का नोबल पुरस्कार न पा गयी हो...

घर में एक चिराग है जो अपना बड़प्पन बना देना भूल गया हो

घर में एक दुबला-पतला जीवन है जो दूसरों को मोटा-ताजा बना-बनाकर रह गया हो...

जब प्रोग्रस कार्ड आया तब पापा को ही स्कूल आना है सुनकर आईने में चेहरा देख्र कर रोनेवाली एक बेचारी है घर में।

घर में एक मालाख्रा है जो पुत्र से बिदा लेकर दरवाज़ा छोडते वक्त एक-दूसरी प्रसव वेदना का अनुभव करती है।

आख्रिर जब वह सागर छूट जाता है तब रोनेवाला घर और मुरझा गए फूल बतायेंगे कि जिस घर में माँ नहीं है वह घर नहीं है। (ईश्वर करें कि वे हमारे माता-पिताओं को दीघार्यू देकर अनुग्रह दें)

सब से बडे कचहरी है पिताजी। लेकिन उस कचहरी की बड़ी-बडी विधियों को भी बदल देने का बकील है माँ।

मेरा देख्रा हुआ पहला डाक्टर माँ है जिसने गिर पडने पर मेरे घुटने में हरा पत्ता रबड़कर लगाया था।

मेरा देख्रा हुआ पहला इंजनीयर है माँ जिसने टूटे ख्रिलौनों को बना-बनाकर ठीक कर दिया।

पिताजी के दंडों को प्रतिवाद करके मुझे बचानेवाली मां ही मेरा देख्रा हुआ पहला वकील।

मां सिर्फ एक सबक नहीं है। वह सचमुच एक विशुद्ध ग्रंथ है जिसमें हज़ारों सबक भरे हुए हैं। वही एक विशुद्ध ग्रंथ है जिसे सिर्फ भले-मानस सन्तान ही पढ़ सकती है।

अनुवाद : प्रो.डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर; आर राजपुष्पम

श्रीलाल शुक्ल और उनका रागदरबारी

डॉ.हुसेनवलि

श्रीलाल शुक्ल का जन्म लखनऊ के समीप 31 दिसम्बर 1925 को अंतरौली नामक गॉव में हुआ था। शुक्ल जी को साहित्यिक अभिरुचि विरासत में ही, प्राप्त हुई थी। 1949 में वे भारतीय प्रशासनिक सेवा में भर्ती हो गये और 1983 में सरकारी नौकरी से सेवामुक्त होकर कविता और गद्यलेखन, कहानियाँ तथा बालसाहित्य सभी पर लेखन किया। किन्तु इन्हें प्रसिद्धि एक उपन्यासकार के रुप में ही मिली। व्यंग्य में उनकी रुचि आरंभ से ही थी। रागदरबारी उपन्यास जो 1968 में प्रकाशित हुआ, इन्हें चर्चा के केन्द्र में लाया। इस उपन्यास के कारण ही शुक्ल जी की ख्याति एक प्रसिद्ध व्यंग्य - उपन्यासकार के रुप में हुई। श्रीलाल शुक्लजी ने 86 वर्ष का लंबा जीवन जिया और इसी अनुपात में हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। लेकिन आज वे हमारे बीच में नहीं रहे। सितंबर 2011 में वे स्वर्ग सिधारे।

'रागदरबारी' ग्राम जीवन का एक व्यंग्यात्मक उपन्यास है। लेखक ने शिवपालगंज गाँव के माध्यम से स्वातन्योत्तर भारतीय सामाजिक व्यवस्था पर करार व्यंग्य कसा है। भारत की पुलिस, कालेजों, स्कूलों, गावों के राजनीतिज्ञों और उनके चंगुल में फँसी सरकारी संस्थाओं के बड़े प्रभावी चित्र उपन्यास में सर्वत्र व्याप्त है। अपने पैने व्यंग्यों के माध्यम से लेखक ने ग्रामीण जीवन की सारी पर्दे उधेड़ दी है। 'रागदरबारी' उपन्यास का केन्द्र शिवपालगंज गाँव हैं। गाँव में इंटरमीडियट कालेज है। सहकारी समिति है, दुकानें हैं, शराब की भट्ठी है। गाँव का सर्वोपरी पंचायत ही है। समस्त उपन्यास में श्रीलाल शुक्ल ने इसी को अपनी कथावस्तु का आधार बनाया है।

'रागदरबारी' ग्राम सभा के लिए होने वाले चुनाव के संदर्भ में ग्राम की राजनीतिक गतिविधियों का बोध व्यंग्य के आधार पर कराता है। सामान्य ग्राकम सभा पर राजनीतिक अधिकार जमाने और फिर उसके द्वारा अर्थिक औन्नत्य प्राप्त करने के लिए उनल्यास के शिवपालगंज में हर तरह की धूर्तता का सहारा लिया जाता हैं। सारे गाँव में वैध्यजी छाया हुआ है और ग्राम सभा पर भी अपने अधिकार को जमाये रखने के लिए अपने नौकर सनीचर को उम्मीदवार के रुप में वह खड़ा करता है। इतना ही नहीं चुनाव जीतने के लिए वैद्यजी उस प्रान्त में प्रचलित चुनाव की तीनों प्रणालियों का गहना अध्ययन करता है और उनमें से एक अच्छी प्रणाली के क्रियान्वयन की योजना बनाता है। परिस्थिति के अनुरुप रामनागरवाली, नेवादावाली या महीपालपुर वाली प्रणाली का वह प्रयोग करता है और हर हालत में प्रधान का चुनाव जीत लेता है। ग्राकम सभा का यह चुनाव, साबित करता है कि छलकपट और धूर्तता के बल पर किस तरह सनीचर जैसे असमर्थ से उसमर्थ और भ्रष्ट से भ्रष्ट आदमी का चुनाव ग्राम सभा के मुखिये के रुप में हो सकता है। गाँव की इस राजनीति को वैद्यजी का बेटा रुप्पन बाबू के शब्दों में हम समझ सकते हैं - "यह तो पालिटिक्स है। इसमें बड़ा-बड़ा कमीनापन चलता है। यह तो कुछ भी नहीं हुआ। पिताजी जिस रास्ते में हैं उसमें इससे भी आगे कुछ करना पड़ता है। दुश्मन को, जैसे भी हो, चित करना चाहिए। यह न चित कर पाएंगे तो खुद चित हो जायेंगे और पिर बैठे चूरन की पुड़िया बांधा करेंगे और कोई टका को भी न पूछेगा"।[1] शिवपानगंज के मतदाता भी उम्मीदवारों को बहकाने में और मूर्ख बनाने में सिद्धहस्त हैं। उनके लिए बोट का कोई महत्व नहीं रह गया है। मतदाता दोनों उम्मीदवारों से तटस्थ रहते और उनसे इस तरह बर्ताव करते कि उन्हें लगता कि कोई वोट देने वाला नहीं है - चुनाव के पांच दिन पहले तक इसी तरह की उपेक्षा का वातावरण बना रहा। होना यह था कि उम्मीदवार लोगों के वोट मांगने के लिए जाते तो लोग दोनों से ज्यादातर यही करते - "हमें कौन वोट का अचार डालना है जीतने कहो उतने बोट दे दें।"[2] वैद्यजी बडी धूर्तता के साथ कालेज की कमिटी का मैनेजर बना रहता है। इतना ही नहीं की आप रेटिव यूनियन के डायरेक्टर के रूप में वैद्यजी तो रहते ही हैं लोगों में सहानुभूति पैदा करते हुए वह फिर अपने ही बेटे बद्री पहलवान को डायरेक्टर (Director) बना लेता है। इस तरह पूरा गाँव सज्जन लोगों के लिए जीने लायक नहीं रहता है - "शिवपालगंज में कायदा - कानून मिट गया है, वहाँ थाना पुलिस नाम की कोई चीज ही नहीं है और चार गुण्डे मिलकर, वहां जैसा चाहे, वैसा कर सकते हैं।"[3] गाँव देखने आया 'रंगनाथ' जल्दी ही अनुभव करनके लगता है - "महाभारत की तरह, जो कहीं नहीं है, वह यहाँ है और जो यहाँ नहीं है, वह कहीं नहीं है।"[4] शिवपालगंज की राजनीति इतनी बढ़ी हुई है कि "यहाँ चौदह साल लड़के में बदमाश बनने की क्शमता कुछ इस तरह से पनपी थी कि बड़े-बड़े बमनोवैज्ञानिक और समाज-वैज्ञानिक भी उसे प्रभु का चमत्कार मानने को मजबूर हो गये थे।"[5] यहाँ के लड़के देश के लिए समस्या बने हुए थे। कहा जा सकता है शिवपालगंज की सारी बुराईयों की जड़ यहाँ की कलपित राजनीति है। "रागदरबारी" का वैद्य जी राजनीति के बल पर आर्थिक फायदा उठाता है, गाँव के लोगों पर धाग जमाये रखता है; लेकिन सामाजिक प्रतिष्ठा

'प्रशान्त द जीनियस'

प्रशान्त बेटे ने अपनी अजीब प्रतिभा के बल पर 'ओट्टीसम' को हरा दिया। दस हज़ार वर्षों के कलंडर तिथि, मास और वर्ष देने से उस दिवस का नाम धोडे सेकन्ड में लिख्र देता है। अब वेलड़ गिन्नेस बुक्क में आनेवाला है। अच्छी तरह कीबोर्ड बजाता है। सुननेवाले दंग रह जाते हैं। कई पुरस्कार प्राप्त हैं।

के साथ, ग्राम सभा का चुनाव हो या छंगामल विद्यालय का निर्वहण हो, कोओपरेटिव युनियन का संचालन या ग्राम का अन्य कोई मामला हो, वैद्य जी अपना अधिकार चलाता जाता है, इस तरह पूरे शिवपालगंज में वैद्यजी की राजनीति फैली रहती है, सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ अदिकार का संचालन करनका वैद्यजी की अपनी राजनीति है।

'रागदरबारी' में शिक्षा संस्थाओं की दुर्गति तो देखी ही जाती है, साथ ही यह भी देखा जा सकता है कि लड़के किस हद तक पढ़ाई को साथ कर रहे हैं - "हजारों की तादाद में आये हुए ये लडके स्कूलों, कालेजों, यूनिवर्सिटियों को बुरी तरह से घेरे हुए थे। शिक्षा के मैदान में झझड़ मचा हुआ था। अब कोई यह प्रचार करता हुआ नहीं दीख्र पड़ता था कि अनपढ़ आदमी जानवर की तरह है। बल्कि दबी जबान से यह कहा जाने लगा था कि ऊंची तालिम उन्हीं को लेनी चाहिए जो उसके लायक हों, इसके लिए 'स्क्रीनिंग' होनी चाहिए। इस तरह से घुमा-फिराकर इन देहाती लड़कों को फिर से हल की मूठ पकड़ाकर खेत में छोड़ देने की राय दी जा रही थी। पर हर साल फेल होकर, दर्जे में सब तरह की ड़ांट फटकार झेलकर और खेली की महीमा पर नेताओं के निर्झरपन्थी व्यवख्यान सुनकर भी वे लड़के हल और कुदाल की दुनिया में वापस जाने को तैयार न थे।"[6] यहां के अध्यापक पढ़ाने में नहीं अपितु व्यापार धन्धे, राजनीतिक गुटबन्धी और असभ्य व्यवहारों में फँसे हुए पाये जाते हैं। छंगामल विद्यालय, विद्यालय के स्तर से गया गुजरा है।

उपन्यास का मोतीराम पढ़ाने का काम भी करता है और आटा चक्की भी चलाता है। क्योंकि छेंगामल विद्यालय की ओर से उसे वेतन के नाम पर कुछ मिलता नहीं है। इसीलिए उस का ध्यान हमेशा पढ़ाने पर नहीं अपितु आटा चक्की की धरधराहट पर लगा रहता है।

'रागदरबारी' उपन्यास के शिवपाल गंज का जीवन सामुदायिक योजनाओं के माध्यम से व्याप्त कलुषित राजनीति के कारण विषाक्त हो उठा है। कोऑपरेटिव यूनियन में दिन दहाड़े गबन होता है और गबन करने वाले रामस्वरूप को देख्रते हुए भी पुलिस पकड़ नहीं पाती है। क्योंकि रामस्वरूप के पीछे वैद्यजी की राजनीति है। "कोऑपरेटिव यूनियन का एक बीज गोदाम था जिसमें गेहूं भरा हुआ था। एक दिन यूनियन का सुपरवाइजर रामस्वरूप दो ट्रक साथ में लेकर बीजगोदाम पर आया। ट्रकों पर गेहूं के बोरे लाद लिये गये और दूर से देख्रने वाले लोगों ने समझा कि यह तो कोऑपरेटिव में रोज होता ही रहता है। ...पर ट्रक उस जगह नहीं मुड़े, वे सीधे चले गये। यहीं से गबन शुरू हो गया। ट्रक सीधे शहर की गल्ला मंडी में पहुंच गए।"[7] इतना ही नहीं को-ऑपरेटिव यूनियन से फायदा उठाने के लिए वैद्यजी अपने ही बेटे 'बद्री पहलवान' को उसका डाइरेक्टर नियुक्त करता है। इसका विरोध तक करने वाला गाँव में कोई नहीं रहता है।

इस तरह हम देख्रते हैं कि आधुनिक युग में ख्रासकर साठोत्तरकाल में शिक्षा की नयी योजनाओं के बावजूद शिक्षा का उतना विकास नहीं हो पाया है, जितना होना चाहिए था। इसके कई कारण हो सकते हैं। लेकिन ग्रामीण संस्कृति की दृष्टि से शिक्षा का यह पिछड़ापन सांस्कृतिक जीवन के पिछड़ेपन को ही सूचित करता है। इस पिछड़ेपन से भारत के ग्राम अभी जूझते देख्रे जाती है।

संदर्भ सूचि:

१. रागदरबारी, पृष्ठ १९०; २. वही, पृष्ठ २६२; ३. वही, पृष्ठ १९९; ४. वही. पृष्ठ ६६; ५. वही, पृष्ठ ६६; ६. वही, पृष्ठ ३२; ७. वही, पृष्ठ ८७

असोसियट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग, दी न्यूकालेज, चेन्नै-१४

कहानी

अन्याय

श्रीमती वन्दना सक्सेना

एम.एक(१), सरस्वती नगर, भोपाल-४६२००३, (म.प्र.)

देखा कितना वाहियाद अफसर है, हर एक कर्मचारी को जरा-जरा सी बात पर परेशान करता रहता है। सारा स्टॉफ उनसे दुःखी था कि सबके साथ अन्याय करता है। हालात यह थे कि लोग उसके सामने जाने से डरते थे कि कहीं कुछ कर न दे। किसी का भी केस उसके पास पहुँचा नहीं कि उसने बिगाड़ा नहीं। किसी भी प्रकरण में नियमों को तोड़-मरोड़ करके उसे नुकसान पहुँचाना उसके बायें हाथ का काम था। शायद की कोई भी प्रकरण ऐसा हो जिसमें उन्होंने किसी कर्मचारी को फायदा पहुँचाया हो। हार कर्मचारी को मेमों, वारनिंग, चार्जशीट देकर उसे हराश करना उनका स्वभाव बन गया था। सारे दफ्तर में बय का वातावरण बन गया था। लोग डर-डर को नौकरी कर रहे थे कि कब नौकरी चली जाए। लोग सामने तो कुछ नहीं कहते थे पर उसे बहुत बद्दुआएँ देते थे। अरे अफसर है, तो लोगों का भला करें बुरा नहीं करें।

पर वह तो ऐसा बना कि हर कर्मचारी का बुरा करनके में ही माहिर था। किसी भी प्रकरण में वह कर्मचारी का अहित करता और डंके की चोट पर कहता हाँ, तुम्हारे प्रकरण में ऐसा होना था पर मैंने तुम्हें नुकसान दिया, तुमसे जो करना है, कर लो? लगे तो मेरी शिकायत ऊपर वाले अधिकारियों से कर दो? उसने ऊपर वालों को पटा रखा था। साथ ही यह भी धमकी देता था कि यदि मेरे खिलाफ शिकायत की तो नौकरी करना भूला दूंगा। लोग बिचारे उसके खिलाफ मुँह से एक शब्द न निकालते। लिखना तो दूर की बात है? लोग मन ही मन उसे बहुत कोसते थे, कि उसके साथ अन्याय करता है, बुरा करता है। ऊपर वाला इसके साथ ऐसा अन्याय करेगा कि सात जन्म भुगतेगा? जीवन भर सुखी नहीं रहेगा? इसके बुरे कर्मों का फल इसके बच्चों भी भुगतेंगे, क्योंकि माँ-बाप के बुरे कर्मों का फल औलाद भी भुगतती है। अरे कर भला तो हो भला वह क्यों नहीं समझता?

आदमी किसी ऐसे जगह पर बैठा है, जहाँ उसके पास अधिकार हैं, तो उसे सबका भला करना चाहिए ताकि उसे लोगों की दुआएँ मिल सकें। किन्तु ऐसा होता नहीं है। जब आदमी के पास कुर्सी और अधिकार होते हैं, तो वह उनका उपयोग भला करनके में कम, बुरा करने में ज्यादा करता है। हर नियम/विनियम को तोड़-मरोड़ कर उसका दुरुपयोग ही ज्यादातर करते हैं। वह तो उसमें मास्टर है। चाहे जिस नियम को तोड़ो, विनियम को मरोड़ो, उसका कुछ नहीं होता दूसरों के केस बिगाड़ना, परेशन करना उसकी हॉवी बन गया था। वह नीचे से जिस तरह जो लिखकर भेजता, ऊपरवाले अफसर भी ओ.के. कर देते थे। दफ्तर का कोई कर्मचारी उससे खुश नहीं था। उसके अन्याय के पापों का घड़ा भर चुका था। हालात ऐसे थे कि किसी के मन में उसके लिए इज्जत नहीं थी। उसे कोई नमस्ते करना भी पसन्द नहीं करता था. बस सामने दिख जाएँ तो मजबूरी में नमस्ते करते थे। उसके सामने पड़ने से भी लोग कतराते थे।

कुर्सी और अधिकार पाकर वह सोचता था कि वह सर्वशक्तिमान बन गया है। जो चाहे वो करेगा। चाहे जिसका काम बिगाड़ सकता है और उसका कोई कुछ नहीं कर सकता? वह जैसा चाहे दफ्तर चला सकता है। जैसा चाहे सबको नचा सकता है? घंमड उसके मुँह पर दिखने लगा था। वह अहं ब्रह्मास्मी बन गया था। लेकिन वह भूल गया था कि घमंड तो त्रिकालदर्शी रावण का भी नहीं रहा था। सोने की लंका जलकर खाक हो गयी थी। फिर उस जैसे तुच्छ आद्मी की क्या बिसात? आखिर लोगों की बद्दुआएँ उसे ऐसी लगी कि पूछो मत? उसका ऐसा एक्सीडेंट हुआ कि मरते-मरते बचा। टांग टूट गयी, प्लास्टर चढ़ गया। अस्पताल में पड़ा है। दफ्तर में सबने खुशियाँ मनाई, अच्छा हुआ साला अन्यायी पड़ गया छः महीने के लिए। यह सुनने में आया कि उसकी लड़की मानसिक विक्षिप्त हो गयी है? बीबी तो आधी पागल पहले से ही है। लड़का ढ़ोर है, पढ़ने-लिखने में डफर। वह न घर से सुखी है, न बाहर से। वैसे भी दूसरों पर अन्याय/बुरा वही करता है, जो खुद दुःखी होता है। जिसका अन्तः कारण सुखी होता है, वह किसी का बुरा नहीं करता। फि अन्यायी एक न एक दिन ऊपरवाले से दंड अवश्य पाता है। दंड भी ऐसा पाता हे, कि उसका सारा गरूर चकनाचूर हो जाता है। न वह घर का रहा न घाट का। कुछ दिनों में उसका रिटायरमेंट भी है। औरत पागर है, लड़की विक्षिप्त, लड़का आवारा, बेरोजगार वे पढ़ा-लिखा? सारी उम्र लोगों पर अन्याय किया, अब जब तक जियेगा, भुगतेगा। अन्याय किया है, तो अन्याय ही पायेगा? जैसा बोया है, वैसा ही काटेगा? रोयेगा अपने कर्मों को? जीवन में सबका बुरा ही तो किया है, उसने।

कहते हैं, जो किसी का बुरा नहीं करता, भला करता है, सबकी भलाई की सोचता है, उसका भला ऊपरवाला करता है। उसके खाते में पुण्य जमा होते जाते हैं। पर उसके खाते में तो पा ही पाप जमा हैं, ऊपरवाला उसका भला कैसे करेगा? सुनते हैं उसकी दशा खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे जैसी हो गयी है। रियाटर हो गया है। पांत्र से लगाड़ाकर चलता है। ऑफिस आता हे, तो लोग उसे देखकर मुँह फेर लेते हैं। लोग नमस्ते तक नहीं करते। दफ्तर की महिला कर्मचारी तो कहती हैं, कि अन्यायी तेरा मुँह काला? मरेगा तो शरीर में कीड़े पड़ेंगे? उसे क्या मालूम कि किसी को सुख देना क्या होता है-

"किसकी कहते हैं अनुभूति सुख की, एक पौधा लगाकर देखो कभी।"

एक प्रामोशन साढे तेरह ट्रान्सफर

रामेश्वर दूबे

सी-५७, परिवहन अपार्टमेंट, से-५, वसुंधरा, गजियाबाद

रुक प्रेमोशन साढ़े तेरह ट्रान्सफर
देखा, सूना है आपने कहीं
मैं तो मेल रहा हूँ वहीं
मैं तो भोग रहा हूँ वहीं
बाइंस बरस बीत गये यह पुरानी बात है
बस सक प्रोन्नति साढे तेरह तबादला
जिसे मैं कहता हूँ दिन वे कहते रात है।
मैं कहता हूँ ख्राद वे कहते भात है
अफसर हो, सरकारी नौकर हो, कवि हो?
ब्राह्मण हो, बनिया हो, हरिजन हो?
हिन्दु हो, मुसलमान हो, गिरिजन हो?
राज पूछने वे क्या तुम्हारी जात है?
और क्या तुम्हारी औकात है?
मौन ही रह करुण मन आक्रोश में कहता
आपके दिये पीड़ा, कष्ट
हमारी स्वतन्त्रता के सौगात है।
मैं सबकुछ हूँ या कुछ भी नहीं
रुक प्रेमोशन साध तेरह...
पत्नी कहनी महामूर्ख हैं आप
अपने मन के राजा हैं
चोर, चुहेडे कूत्ते, कम पढ़ भी
राज बजाते आपके बाजा हैं।
घर में जितना मुक्त बोल लीजिए
अपने मन की भड़ंस ख्रोल लीजिए
बाहर तो कुछ कर पाते नहीं
उनके आगे आपके दाल गल पाते नहीं।
अन्यथा बाईस वरस बीत गये
रुक भी प्रोमोशन हाथ आते नहीं!
उसके ऊपर साधे तेरह दबादत्ला
अरे! डूब मरने को चूल्लू भर पानी है कहीं!
रुक प्रेमोशन साधे तेरह....
मैं प्यारी पत्नी को समझ्ञाता
देख्रें, जीवन में कितना आनन्द है आता
जब हृदय करुणित मन संतोषी
फिर क्यों ढूंढे कहाँ कौन है दोषी?
जो होने होते हैं वही होते हैं
मैं हँसता हूँ वे रोते हैं
हम वही काटते हैं जो बाते है
अहा! हम क्या पाते हैं, क्या ख्रोते हैं?
फिर भी मेरे पतिबद्धता, प्यार, समर्पण में तो कोई कमी नहीं
रुक प्रेमोशन सारे तेरह चन्सपर....
नेह स्नेह की करके बाते
हमको क्यों नाहक फुसलाते?
बिन पद पैसा के आज सिर्फ
ज्ञान, चरित्र से कौन कहाँ प्रतिष्ठा पाते?
हीरे की हार की छोडे बात
कमी सितंबर की विधिया भी तो लाते!
मेहनत करके मैं मरी जा रही
बाईस बरस में घर में काश
एक कामवाली रख्र पाते!
जाइए बाहर औरों की तरह ओढ़िस ख्रोल
अन्यथा मैं ख्रोलूंगी अब आपकी पोल
बाईस बरस में सक प्रोन्नति साढे तेरह तबादला
आपकी जिन्दगी की यह उपलब्धि क्या कम रही!
रुक प्रेमोशन साढे तेरह ट्रान्सफर...
यह व्यंग्य सुन मैं हुआ मौन
आख्रिर अब संबलदेगा कौन?
स्वर्णाभुषण सारी सुख्र सुबिधा तो मिल सकती है
क्या मेरी अन्तर्रात्मा थोड़ी अन्दर हिल सकती है?
हिल सकती है, पर मन बेच्चैन चित्र में अन्दर्द्वन्द्व भरा होगा
कहीं काला, कहीं सफेद कहीं लाल हरा होगा।
झंझ्रावाती मन और म्लान मूख्र
वे सह न संकी देर तक मेरा दुःख्र।
बोली; अरे! कहाँ कौन दुबिधा में पड़ गये
किस पीड़ा संताप में आय ञड़ गये?
अह! हम करते हैं भ्रम हमारा सेहत ठीक
हमने ख्रूद बनाई है अपनी यह नव दुर्गम भीक
क्यों हम पसारे हाथ, माँगे किसी से भीख्र
है कहीं कुटिल या वणिक बुद्दि में आनन्द दिख्र?
आप अपने उसी संघर्ष पथ पर अड़े रहे
जहाँ भी है, जैसे हैं, वैसे ही ख्रड़े रहे।
आप नारियल हैं बेर क्यों बनें,
ही तो आन्तरिक आकर्षण
शरीर स्वस्थ, चित्त स्थिर, समभाव
मन तो है आपका दर्पण
पर आप तो है नास्तिक
और मैं करती रोज भगवान पूजा, प्रार्थना
वे बदलें आयको कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं
एक प्रेमोशन साढ़े तेरह ट्रान्सफर.... •

ये भी शोध-पत्रिका के आजीवन सदस्य बने

नाम	:	**रन्जू एम.**
पता	:	पुत्तनवीडु, वन्चियूर पी.ओ., आट्टिंगल
शैक्षिक योग्यताएँ	:	एम.ए., एम.फिल., बी.एड.
संप्रति	:	शोधछात्र, एम.जी. कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम
निदेशक	:	डॉ.उषाकुमारी के.पी.

अमृतलाल नागर : हिन्दी के गद्य शिल्पी

डॉ.रंजीत रविशैलम

आधुनिक भारतीय हिन्दी साहित्य में श्री. अमृतलाल नागर का नाम सम्मान से लिया जाता है। उनका जन्म १७ अगस्त १९१६ को गोकुलपुरा गॉव, आगरा में हुआ था। अतः वर्ष २०१६ आपका जन्म शताब्दी वर्ष है। उनके पूर्वजों का मूल निवास गुजरात में था. पं. राजराम आपके पिता थे और माता श्रीमती विद्यावती थी। उनके पिताजी के अकालमृत्यू के पश्चात् आपकी आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी। श्री. अमृतलाल नागर की पत्नी थी श्रीमती प्रतिभा उर्फ बिट्टे। उनकी तीन संतानों हुई पहली संतान पुत्र श्री.कुमुद नागर (प्रसिद्ध नाट्यकर्मी), दूसरी संतानपुत्र श्री.शरद नागर व तीसरी संतान पुत्री अचला है।

आजीविका के लिए नागरजी ने कई काम किए। इशुरेंस कंपनी में क्लर्क, सिनेमा जगत् में संवाद लेखक, आकाशवाणी में ड्रामा प्रोड्यूसर, संपादक आदि से होकर आखिर स्वतंत्र गद्य लेखक के रूप में परम ख्याति प्राप्त की। निस्वार्थ साहित्य सेवा केलिए कई पुरस्कार व सम्मान से उनको नवाज़े गए। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, नागरी प्रचारिणी सभा का पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का पुरस्कार आदि सम्मानों के साथ-साथ वर्ष १९८१ में पद्मभूषण अलंकरण से सम्मानित कर इस गद्य शिल्पी का साहित्य में स्थान दृढ़तर कर दिया।

नागर का कृतित्व :

उपन्यास साहित्य : महाकाल (१९४७), बूँद और समुद्र (१९५६), शतरंज के मोहरे (१९५९), सुहाग के नूपुर (१९६०), अमृत और विष (१९६६), सात घूँघट वाला मुखड़ा (१९६८), एकदा नैमिषारण्ये (१९७२), मानस का हंस (१९७३), नाच्यौ बहुत गोपाल (१९७८), खंजन नयन (१९८१), बिखरे तिनके (१९८२), अग्निगर्भा (१९८३), करवट (१९८५), बपीढ़ियाँ (१९९०)।

कहानी संग्रह : वाटिका (१९३५), अवशेष (१९३८), तुलाराम शास्त्री (१९४१), आदमी नहीं! नहीं! (१९४७), पाँचवा दस्ता (१९४८), एक दिल हज़ार दास्ताँ (१९५५), ऐटम बम (१९५५), पीपल की परी (१९६३), कालदंड की चोरी (१९६७), मेरी प्रिय कहानियां (१९७०), पाँचवा दस्ता और सात अन्य कहानियां (१९७०), भारतपुत्र नौरंगीलाल (१९७०), सिकंदर हार गया (१९८४), एक दिल इज़ार अफ़साने (लगभग सभी कहानियों का संकलन (१९८६)।

संस्मरण, रिपोतजि, निबंध आदि : गदर के फूल (१९५७), चैतन्य महाप्रभु कोठेवालियाँ (१९६०), जिनके साथ जिया (१९७३), चैतन्य महाप्रभु (जूवनी, १९७८), टुकड़े-टुकड़े दास्तान (आत्म संस्मरण, १९८६), व साहित्य व संस्कृति (१९८६)।

नाट्य-साहित्य : बाल की बात (१९७४), चन्दन वन (१९७६), चक्करदार सीढ़ियाँ और अंधेरा (१९७८), उतार चढ़ाव (१९७८), युगावतार (१९५६), नुक्कड़ पर (१९८१), व चढ़ा न दूजो रंग।

व्यंग्य साहित्य : नवाबी मसनद (१९३९), सेठ बाँकेमल (१९५५), कृपया दायें चलिए (१९७२), हम फिदाए लखनउ(१९७३), मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ (१९८५), व चक्कल्लस (१९८०)।

बाल साहित्य : नटखट चाची (१९४६), निंदिया आजा (१९५०), बजरंगी नौरंगी (१९६९), बजरंगी पहलवान (१९६९), इतिहास के झरोखे (१९७०), बाल महाभारत (छः खंड १९७१), बजरंगी स्मगलरों के फंदे में (१९७२), हमारे युग निमति (१९८२), छः युग पुरुष (१९८२), अकल बडी या भैंस (१९८२), आओ बच्चो, नाटक करें (१९८८), व खतखंडी हवेली का मालिक (१९९१)।

अनुवाद साहित्य : प्रेम की प्यास (१९३७), बिसाती (१९३८), काला पुरोहित (१९३९), आँखों देखागदर (१९५५), दोफक्कड़ (१९५५), व सारस्वत (१९५६)।

ऐसी महान कृतियों के रचयिता श्री. अमृतलाल नागर का स्वर्गवास २३ फलवरी सन् १९९० को हुआ।

रविशैलम, कट्टच्चलकुषी पी.ओ., बालरामपुरम, तिरुवनन्तपुरम, केरल-६९५५०१

मुक्तक

डॉ.सुरेश उजाला,
उपनिदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उ.प्र., लखनऊ

रंग प्रतिदिन बदलती रही जिन्दगी
कसमसाती-मचलती रही जिन्दगी
कॉरवाने सफर यूँ ही चलता रहा
और गिरती-संभलती रही जिन्दगी

वक्त से यूँ उचटकर कहाँ जायेंगे
आप खुद में सिमटकप कहाँ जायेंगे
चमचमाती हुई चाँदनी हर तरफ
इस चमक से कर कहाँ जायेंगे

जल को जल लिखना है तुमको
मल को मल लिखना है तमुको
लिखने में मत गफ़लत करना
छल को छल लिखना है तुमको

आँसुओं को जल समझ पीता रहा
वो मरण के साथ ही जीता रहा
चाहतों की चादरें फटती रही
और वो जीजान से सीता रहा।

१०८, तकरोही, पं.दीनदयालपुरम् मार्ग इन्दिरा नगर, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) २२६०२९

डॉ. चन्द्रशेखरन नायर का रचना - संसार

(१) द्विवेणी - भावात्मक नाटक (₹.....) अनेक भाषाओं में अनूदित, अंग्रेजी में Death and ressurrection; **(२) प्रतीक पूर्वी तथा पश्चिमी - देश में प्रकाशित एक मात्र**, (₹.१०१) सैद्धांतिक रचना १९७२; (३) **प्रतीकी कवि सुमित्रानंदन पंत,** (₹.११०) (शोध निबंध, १९७२); (४) **पंत और जी शंकरकुरुप,** (₹.११०) (शोध निवंध, १९८०); (५) **श्रेष्ठ सिम्बॉलिक कवि जी. शंकर कुरुप,** (₹.११०) - इसका प्रो. सिद्दिकी द्वारा मलयालम में अनुदित होकर प्रकाशन हुआ (शोध निबंध, १९८५), मलयालम में प्रो. सिद्दिकी द्वारा अनूदित; **(६) हिन्दी और मलयालम के दो सिम्बॉलिक कवि,** (₹३०१) - बिहार विश्व विद्यालय का शोध निबंध १९८०, इसका प्रकाशन यू.जि.सी. ने किया है; (७) **धर्म और अधर्म,** (₹.२५) - तीन लघुनाटकों का संकलन, १९८२; (८) **डा.एन.चन्द्रशेखरन नायर का नाट्य साहित्य,** (₹.३००) - डा.भोलानाथ तिवारी द्वारा भूमिका लेखन, बीस समीक्षा लेखन के साथ, १९८२; (९) **महर्षि विद्याधिराज तीर्थपाद**, (₹.२५) - केरल के महान संत की जीवनी जो प्रो.नारायण गुरु के गुरु थे, १९८३; (१०) **केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास,** (₹.३००) - सिर्फ केरल में ही इस प्रकार की एक हिन्दी इतिहास रचना प्रकाशित हुई है १९८९, केरल के विश्व विद्यालयों का पाठ्य-ग्रंथ; (११) **कविताएँ देश-भक्ति की,** (₹.१५०) - देश के अनेक मिथकों को अभिव्यक्त करने वाली कविताओं का संकलन, विश्व विवेक अमेरिका, पत्रिका के संपादक डा. भूदेव शर्मा द्वारा भूमिका लेखन, १९९३; (१२) **डा.नायर की साहित्यिक रचनाएँ,** (₹.३००) - ५४ सांस्कृतिक शैक्षिक शोधपरक और भावात्मक लेखों का संकलन काशी विश्व विद्यालय हिन्दी प्रो.डा.श्याम सुन्दर शुक्ल द्वारा भूमिका लेखन, १९९३; (१३) **गाँधीजी भारत के प्रतीक,** (₹.५०) - एक गवेषणात्मक ग्रंथ, तमिलनाड़ संस्कृति द्वारा पुरस्कृत, एक विश्व-कोश जैसा आधिकारिक ग्रंथ, १९९८; (१४) **निषाद-शंका,** (₹.३०) - संस्कृतिक एवं भावात्मक कविताओं का संकलन, १९९८; (१५) **डा.नायरजी का संपादकीय,** (₹.२५०) - २ अक्तूबर १९९६ से २ जनवरी २००६ तक प्रकाशित साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका के सम्पादकीयों को एकत्र करके निर्मित एक ग्रंथ है डा.नायरजी का संपादकीय। ग्रंथ में बीस उल्लेखनीय घटनाओं के ट्राई कलर फोटो और डा.नायर द्वारा उचित दस चित्रों के रंगीन फोटो संकलित है। भारत सरकार द्वारा अनुमोदित; (१६) **केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास (संक्षिप्त),** (₹.५०) - २००५, श्रीमती छाया श्रीवास्तव द्वारा संक्षिप्तीकृत, केरल विश्व विद्यालय का पाठ्यग्रंथ; (१७) **चिरंजीव महाकाव्य,** (₹.३००) - सप्त चिरंजीवियों पर आधारित महाकाव्य, २००८, दिल्ली में लोकार्पित; (१८) **डा.एन.चन्द्रशेखरन नायर संवेदना और अभिव्यक्ति,** (₹.४००) - २००८, डा.अमरसिंह वधान द्वारा सम्पादित, अभिषेक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित; (१९) **चिरजीव महाकाव्य,** (₹.७५०) - २००९, कलाप्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशन (देश के ४५ मूर्धन्य साहित्य नायकों के काव्य पर लेखन समेत); (२०) **डा. चन्द्रशेखरन नायर की लिखी अवतरणिकाएँ**, (₹.३००) - २०११, इसमें ४६ ग्रंथों की अवतरणिकाएं संकलित हैं, भूमिका लेखन डा.एस.तंकमणि अम्मा; (२१) **गंगा और हरिद्वार,** (₹.७५) - २०११, मलयालम काव्य में गंगा और हरिद्वार का प्रतिपादन। झारखण्ड सरकार द्वारा विशेषांक में प्रकाशित; (२२) **एक कार्मयोगी की आत्मकथा**, (₹.५००) भारत स्वतंत्रता के रास्ते से २०११ (अनुवादक श्रीमती कौसल्या अम्माल); (२३) **तुषार,** (₹.१०); (२४) **केरल हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास** (₹.१२३) केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

മലയാളം കൃതികൾ *(For Sale)*

(1) **ആറ്റം യുഗത്തിലും ഋഷിപ്രാഭവം**, (₹.40), १९८६; (2) **ചന്ദ്രശേഖരൻ നായരുടെ കഥകൾ** (₹.175), २००७;
(3) **രുദ്രാവതാരം ശ്രീ ഹനുമാൻ** (₹.50), २००९; (4) **കേരളത്തിലെ പ്രേമചന്ദ് ഡോ. എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ** (ഹിന്ദിയിൽനിന്നും ഡോ.ജി.കമലമ്മ); (5) **സാഹിത്യം, സംസ്കാരം, കല, സാഹിത്യകാരൻ** - (₹.500); (6) **ഡോ. എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ ഒരു ചിത്രകാരനും** - (₹.50); (7) **കേരള ഹിന്ദി സാഹിത്യ അക്കാദമി സുവനീർ** - (₹.100); (8) **ദേവയാനി (മലയാളം)** - (₹.25); (9) **കേരളത്തിലെ കലകൾ** - (₹.75); (10) **സീതമ്മ (നോവൽ)** - (₹.150); (11) **സൂര്യന്റെ മക്കൾ (ബാലകവിത)** - (₹.5); (12) **സിമ്പോളിക് കവി ജി.ശങ്കരക്കുറുപ്പ്** - (₹.110); (13) **ശ്രീ വിദ്യാധിരാജ തീർത്ഥ പാദ്** - (₹.25); (14) **ശാരദാതിലകത്തിന് ഒരു ഭൂമിക** - (₹.250); (15) **തമിഴ് ജീവനി ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ** - (₹.150) (ശ്രീമതി കമലാ പത്മഗിരീശ്വരൻ); (16) **അദ്ധ്യാത്മരാമായണത്തിലെ ഭഗവാൻ രാമൻ സ്തുതിക്കപ്പെടുന്നു (മലയാളം)** - (₹.100) (ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ), 2016, ശ്രീനികേതൻ പ്രകാശൻ.

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के ग्रंथ आधे मूल्य पर,
श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम-४

एस.बी.टी. हिन्दी साहित्य पुरस्कार 2015-16

श्रीमती आनन्दवल्ली वी.
(रिटेंड अध्यापिका)
मौलिक ग्रंथ - श्रद्धांजलि (विरह काव्य)

जयकृष्णन जे.
(असो.प्रो.सरकारी कॉलेज, अंपलप्पुषा)
शोध ग्रंथ - रामदरश मिश्र का काव्यसाहित्य : स्त्री शाक्तिकरण के विशेष संदर्भ में

दुःखों से बचने केलिए जीवन के बायोडाटा में सिर्फ उसे शुमार करें जो आज आपके पास है

सीताराम गुप्ता

उर्दू शायर अमजद इस्लाम की गज़ल का मत्ला है:

कहाँ आ के रुकने थे रास्ते, कहाँ मोड़ था उसे भूल जा,
वो जो मिल गया उसे या रख जो नहीं मिला उसे भूल जा.

जीवन में हमारी बहुत-सी ख्वाहिशें होती हैं। उनमें से कुछ पूरी हो जाती हैं तो कुछ नहीं। हमारी जो ख्वाहिशें पूरी हो पातीं हमारा सारा ध्यान उन्हीं पर केन्द्रित रहा है। हम बार-बार उन्हीं अभावों को लेकर दुःखी होते रहते हैं। अभाव ही हमारी ज़िंदगी का चिंतन बन जाता है जो हमारे दुःखों का सबसे बड़ा कारण है। यही अभाव का चिंतन कालांतर में हमारे जीवन की वास्तविकता में परिवर्तित हो जाता है क्योंकि हम जैसा सोचते हैं वही हमारे जीवन में घटित होता है। ख्वाहिशों अथवा इच्छाओं का कोई अंत नहीं होता। लेकिन ये हकीकत हम नज़रअंदाज़ कर देते हैं कि अभावों के बावजूद हमें जीवन में बहुत कुछ मिला होता है। हमारी अनेक उपलब्धियाँ होती हैं। हमने अभावों के बावजूद हार नहीं मानी है और ईमानदारी से आगे बढ़ने का प्रयास करते रहे हैं। इन पंक्तियों का कैसे नज़रअंदाज़ किया जा सकता है? लेकिन वास्तविकता यही है कि हम इन्हें नज़रअंदाज़ कर जो नहीं किया या जो नहीं मिला उसे सोच-सोचकर परेशान होते रहते हैं।

हम बोर्ड या यूनिवर्सिटी के टॉपर न सही लेकिन हमने भी स्कूल-कॉलेजों में उतना ही वक्त दिया है जितना टॉपर्स ने दिया है। हमारे प्रयास और कर्म महत्वपूर्ण हैं न कि परिणाम। उद्देश्य महत्वपूर्ण होते हैं न कि कमाई। हमारे पास विशाल प्रासादनुमा बंगला अथवा शानदार फार्महाउस नहीं है तो क्या रहने के लिए एक साधारण-सा घर तो है। हमारा अपना भरा-पूरा परिवार तो है जो हर प्रकार से हमारे जीवन में खुशियाँ बिखेरता रहता है। कई लोग पूरी दुनिया में नितांत अकेले हैं। असंख्य लोगों के पास न तो सर छुपाने के लिए छत ही है और न ठीक से दो वक्त की रोटी जुगाड़ ही। क्या हम अनेक लोगों से हर तरह से बेहतर नहीं हैं? क्या ये हमारी वर्तमान संतुष्टि के लिए पर्याप्त नहीं? हम और अच्छा घर बनाने या आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ करने का प्रयास करें लिकिन वर्तमान में हमारे पास जो उपलब्ध है उससे आनंदित होने में ही समझदारी है। जीवन में मानसिक संतुष्टि अत्यंत महत्वपूर्ण है मात्र भौतिक जगत की उपलब्धियाँ नहीं।

हमें जीवन की वास्तविकता को भी समझने का प्रयास करना चाहिए। निदा फ़ाज़ली की पंक्तियाँ हैं।

जो जी चाहे वो मिल जाए, कब ऐसा होता है,
हर जीवन जीने का समझौता होता है,
अब तक जो होता आया है वो ही होना है,
जीवन क्या है चलता-फिरता एक खिलौना है,
दो आँखों में एक से हँसना एक से रोना है।

जीवन एक विचित्र पहेली है। हम इसकी विचित्रता को समझकर उसके अनुरूप ढलने की बजाय उसके शिकार हो जाते हैं। जीवन में हार न मानना व आगे बढ़ने के लिए संघर्ष करना बहुत अच्छी बात है। हम बाहरी दुनिया में तो खूब संघर्ष करते हैं लेकिन अपने अंदर बिलकुल नहीं झांकते। यदी हम अपने अंदर के संघर्ष को कम कर लें तो बाहरी संघर्ष भी कम हो जाए और हम अपेक्षाकृत सुखी हो जाएँ। हमें जीवन में जो मिला है उसे क्वीकार कर उससे प्यार शुरू कर दें तो हमारी अधिकांश मस्याएँ समाप्त हो जाएँ। जीवन में संघर्ष को समाप्त कर आनंदित रहते के लिए जीवन की वास्तविकता को समझने के साथ-साथ जीवन के सकारात्मक पक्षों को याद रखिए व नकारात्मक पक्षों को भुला दीजिए।

जब हम नौकरी वगैरा के लिए अपना बायोडाटा तैयार करते हैं तो उसमें हम केवल अपनी शैक्षिक उपलब्धियों व प्राप्त अनुभवों का ही शुमार करते हैं अपनी अयोग्यताओं, असफलताओं अथवा कमज़ोरियों का नहीं। हम उन विषयों या भाषाओं का नाम लिखते हैं जिसमें हमने बीए एमए वगैरा किया होता है न कि उन विषयों या भाषाओं का नाम लिखते हैं जो हमने पढ़े ही नहीं। हम कभी नहीं लिखते कि मैंने इतिहास में एमए नहीं किया या प्रबंधन में डिप्लोमा नहीं किया फिर जीवन के बायोडाटा में क्यों उन चीड़ों का शुमार करते हैं जो हमें नहीं मिल पाई हैं? हम क्या हैं और क्या कर सकते हैं ये महत्वपूर्ण है न कि हमें क्या नहीं मिला और हम क्या नहीं कर सकते। यदि ये छोटी-सी बात हमारी समझ में आ जाए तो जीवन की दिशा बदल जाए। हम बिना कारण मोल ली परेशानियों से बच जाएँ।

हमारे अतीत में सुख और दुःख दोनों होते हैं। कुछ लोग अतीत के दुःखों में डूबे रहते हैं। बुरे क्षणों को कोसते रहते हैं। अपने दुःखों व असफलताओं के लिए दुनिया जहान को दोषी ठहराते रहते हैं।

ये भी शोध पत्रिका के प्रतिष्ठित संरक्षक बने

डॉ.सुशीलकुमार कोटनाला

आप उत्तराखंड के नामी लेखक एवं उत्कृष्ट वक्ता हैं। आपके अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। चार महीने हुए आपने केरल और अकादमी के चेयरमेन के बारे में दो ग्रंथ लिख लाये हैं। अकादमी ने उन्हें २१ हज़ार रूपयों का परस्कार दिया। एक विराट सभा में उनका आदर सम्मान किया। लगता है कि उनका भविष्य उज्ज्वल होगा। •

दोस्ती, रिश्तेदारों व अन्य लोगों के प्रति शिकवे-शिकायत कभी कम नहीं होते। यदि किसी ने बुरे वक्त में या ज़रूरत के वक्त साथ नहीं भी दिया तो भी क्या? क्या ये महत्वपूर्ण नहीं कि आप किसी का अहसान लेने से बच गए? दूसरे उन परिस्थितियों में उनसे उबरने के लिए आपने कुछ न कुछ नया करने की ठानी होगी। आपका दृष्टिकोण बदला होगा। आपके आत्मविश्वास व आपकी कुछ करने की क्षमता में वृद्धि हुई होगी। क्या ये आपकी उपलब्धि नहीं? क्या ये परिवर्तन महत्वपूर्ण नहीं? जीवन में आनंदित रहते के लिए घटना के सकारात्मक पक्ष अर्थात् प्राप्त उपलब्धियों को याद रखिए व नकारात्मक पक्ष अर्थात् असफलताओं को मत याद कीजिए।

कई लोग वैसे तो बड़ी-बड़ी डींगें मारते हैं कि लाखों की कमाई है पर इस बात का रोना और भी जिद्द से रोते हैं कि ख़र्च भी लाखों का है। कमाई से सुख नहीं ख़र्च से दुःख। भाई साहब कमाई न होती तो क्या होता? कहाँ से करते लाखों का ख़र्च? इतनी अच्छी कमाई है कि सारे ख़र्चे बडी आसानी से निकल आते हैं ये सोचना ही अच्छा होगा। कई लोगों का सारा ध्यान कमाई पर होता है और प्राप्त कमाई से वो प्रसन्न रहते हैं तो कई लोगों का सारा ध्यान कर्चों पर लगा रहता है और खर्चों को देख-देखकर परेशान होते रहते हैं। मात्र विचार अथवा सोच से हम दुःखी अथवा सुखी हो सकते हैं अतः सोच को सही व प्रसन्नता के अनुकूल बनाने का प्रयास करना ही श्रेयस्कर है। प्रसन्नता ही उत्तम स्वास्थ्य की कुंजी है।

ए.डी-१०६-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-११००३४

गंगा

मूलग्रंथकार : निर्मला राजगोपाल
अनुवादक : आर.राजपुष्पम

युग युगान्तरों में संस्कार श्रोत सी
ख्याति से विलसित पूज्य नदी गंगे!
विष्णु-पादस्पर्श से धन्य हो गई तू
शिव जटा से धरती पर फैल गई तू
हिमवान की पुत्री तू भीष्म की जननी तू
शंतनु राजा की धर्म पत्नी है तू
पूर्वज जैसे सगरर केलिए सद्गति की
खोज में घोर तप से भगीरथ
ब्रह्मा का अनुग्रह पाया भूपालक।
धरा में लाया देवी गंगा को
आर्ष संस्कृति झलकती इस पृथ्वी से
क्या, भागीरथी गायब हो सकती है!
कितनी जय-पराजय, उत्थान-पतन
सब केलिए सिर्फ गंगा तू ही साक्षी
परंपरा बीत गई तोभी तेरे पाद-
कमलों की खोज में आते जनावली
शंखनाद गूँज उठता, घंटी बज जाती
देवी केलिए संध्या पूजा-मुहूर्त हो गया
भक्ति से उमड़ पड़ते हैं हृदय सारे
जीभ से निकल पड़ता है नाम संकीर्तन
अर्चना पुष्प इन्द्रधनुष बन जाते है
आरति नक्षत्रदीप सा बदल जाती है
हे ज्ञान गंगा प्रवाह! पावन तेरे सम्मुख •
मेरा हृदय भी घी दीप सा जल जाता है

योग की प्रतिष्ठा

आर.राजपुष्पम

भारत संस्कृति का अनमोल तेजोमंत्र
ऋषिगणों के चुंबन का स्नेहहार
उन्मेषदायक उत्साह का सुवर्ण सून
मानव-जीवन-राह में शोभित ज्योति
योग - योग - योग
एक स्वच्छ जीवन के स्वस्थता पूर्ण मन के अन्दर
सारी वाधाओं को दूर फेंक कर
सत्य की सुस्थिर राह में आ जाता
शरीर-साधना रूपी संस्कार
आध्यात्मिक चेतना का तेजोस्वरूप
योग की प्रवृत्तन शैलियाँ सारी
मानव को आरोग्य वर्धन दायिनी
योग - योग - योग
योग को अपनाएंगे हम एक साथ
स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन से
ऐश्वरपूर्ण संतुष्ट जीवन का आस्वादन
नित्य ही जगत् को दिखाएंगे हम
योग - योग - योग
अर्पित करेंगे हम आशिशों के सुमन
सारे योगाचार्यों के चरण दलों पर
अहिंसा और सत्य की राहों पर चलकर
गले लगाऐंगे योग के मित्र हम •

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का 35 वाँ वार्षिक रिपोर्ट

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का ३५ वाँ वार्षिक सम्मेलन केरल हिन्दी साहित्य अकादमी हौल में १२ नवंबर २०१६ में दुपहर २.३० बजे से ५.३० तक संपन्न हुआ। सम्मेलन दो भागों में विभाजित किया था। कुमारी पार्वती चंद्रन की प्रार्थना से सभा की शुरुआत हुई। डॉ.एस.तंकमणिअम्मा (महामंत्री, के.हि.सा.अकादमी) ने सदस्यों का स्वागत किया। वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन आदरणीय जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायर ने किया। उन्होंने यह भी कहा था कि आज के युवपीढ़ी केलिए नवतिवाले साहित्यकार नायरजी ज्वलंत उदाहरण ही है। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर (अध्यक्ष, के.हि.सा.अकादमी) ने अध्यक्षीय भाषण दिया। उन्होंने अध्यक्षीय भाषण में अकादमी की उपलब्धियों के बारे में विस्तारपूर्ण विचार किया। डॉ.पी.लता (मंत्री, के.हि.सा.अकादमी) ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत किया। मुख्य भाषण में श्री.के.एस.रामचंद्रकुरुप ऐ.ए.एस. (अध्यक्ष, भारतीय विद्याभवन) ने अकादमी के अध्यक्ष और सदस्यों की खूब प्रशंसा करके किया था। अधिवक्ता श्री.अय्यप्पन पिल्लै और डॉ.टी.पी.शंकरकुट्टि नायर दोनों ने आशीर्वाद भाषण में अकादमी की उपल्बधियों की खूब प्रशंसा की थी। श्रीमती आर.राजपुष्पम ने (कवयित्री) वी.आनंदवल्ली की कविता बाष्पांजलि का पारायण किया।

इसके बाद आदरणीय श्री.सी.जी.राजगोपाल का भाषण और पुस्तक प्रकाशन हुआ।

प्रकाशन ग्रंथ - चिरंजीव महाकाव्य का ग्रंथसंग्रह श्री.के. रामनपिल्लै ने पुस्तक स्वीकार किया। ग्रंथ परिचय श्री.पी.एन.बालकृष्णन नायर और समीक्षा श्री.तुम्पमण तंकप्पन ने किया।

इसके बाद एस.बी.टी. हिन्दी साहित्य पुरस्कार श्री.रामनकुट्टि मात्यू (जनरल मानेजर, हूमन रिसोर्स, एस.बी.टी. पूजप्पुरा ने किया। पुरस्कार प्राप्तकर्ता श्रीमती वी.आनंदवल्ली (रि. हिन्दी अध्यापिका), बाष्पांजलि, शोक काव्य, डॉ.जयकृष्णन जे (प्रो.सरकारी कालेज, अंपलप्पुषा) स्त्री शाक्तीकरण के विशेष संदर्भ में शोध ग्रंथ) आदियों ने स्वीकार किया। फिर पुरस्कृत साहित्यकारों का जवाबी भाषण हुआ। डॉ.के.पी.उषाकुमारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। सम्मेलन का संचालक डॉ.उषाकुमारी थीं।

सभा में उपस्थित पचहत्तर प्रेक्षकों को चायसत्कार की व्यवस्था की गयी थी। शाम को ५.३० बजे राष्ट्रगीत के साथ-साथ समारोह का सुंदर समापन हो गया।

जय हिन्दी, जय हिन्दी।

आर.राजपुष्पम, मंत्री, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

पुस्तक परिचय

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायरः जीवन और साहित्य

यह ग्रंथ डॉ.सुशीलकुमार कोटनाला जी का प्रतिष्ठित रचना है। डॉ.चन्द्रशेखरनायर मलयालम भाषी हैं। आप हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान एवं विश्वविख्यात ग्रंथकार है। उनपर कोटनाला जैसे हिमालय निवासी का प्रशंसात्मक लेखन मारके का बना हुआ है। विश्व हिन्दी सम्मान प्राप्त नायर साहब आज अपने ग्रंथकार की हैसियत से विश्व साहित्यकार बने हुए हैं। आप साहित्य के सभी विधाओं में अनूढे साहित्यकार हैं और रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महादेवी वर्मा आदी हिन्दी कविवरों की तरह महान चित्रकार भी है। डॉ.कोटनाला जी का ग्रंथ डॉ.नायर जी के उपयुर्क्त सभी व्यक्तित्व दिशाओं का स्पष्ट एवं गंभीर चित्रण है।

श्रीमती आर.राजपुष्पम

केरलीय भाषा, साहित्य और संस्कृति

यह ग्रंथ भी डॉ.सुशीलकुमार कोटनाला की एक परिचयात्मक रचना है। सुदूर दक्षिण के सम्बन्ध में सही चित्रण देना असामान्य क्षमता की बात है। वही काम डॉ.कोटनाला जी ने किया है। लेखक ने केरल के बारे में जो परिचय दिया है वह पाठकों की विशेष अभिरुचि का लक्ष्य करके चित्रित किया है। बारह विषयों पर लिखा है जो इस प्रकार हैं: (१) पद्मनाभ मंदिर; (२) ओणम पर्व; (३) कथकलि; (४) जगद्गुरु आदि शंकराचार्य; (५) देवभूमि केरल; (६) केरल की हृदयस्थली तिरुवनन्तपुरम; (७) मलयालम साहित्य का संक्षिप्त परिचय; (८) केरल के सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना; (९) भारतीय संस्कृति के अमर गायक वल्लत्तोल नारायण मेनन; (१०) चित्रकला देवतात्मा राजा रविवर्मा; (११) केरल के वीर प्रसूता भूमि के योद्धा नायर; (१२) डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की चित्रकारिता में संवेदनाएं। इन बारह आलेखों के अंत में परिशिष्ट भी लिखा हुआ है।

सम्पादक

विश्व हिन्दी दिन समारोह के सम्मेलन में डॉ.कोटनाला जी का रचा ग्रंथ "डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जीवन और साहित्य" डॉ.तंकमणि अम्मा को देते हुए डॉ.टी.पी.श्रीनिवासन द्वारा लोकार्पित हुआ।

सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर विश्व हिन्दी सम्मान स्वीकार करते हैं। देते हैं भारत सरकार के मंत्री श्री.राजनाथ सिंह जी। साथ खडे हैं मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री श्री.शिवराज सिंहजी।

पिछले चुनाव में श्री.ओ.राजगोपाल बी.जे.पी. सदस्य के रूप में चुने गये डॉ.नायर उन्हें आदर देते हैं।

बी.जे.पी. नेता श्री.एल.के .अद्वानी और डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर दोनों हिन्दी रत्न पुरस्कार के सन्दर्भ में, दिल्ली में।

पूर्व अम्बासडर श्री.टी.पी.श्रीनिवासन जी को पुष्प गुच्छा देते हुए श्री. योगेशचन्द्र स्वागत करते हैं।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के तत्वावधान में विश्व हिन्दी दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। पूर्व अम्बासडर टी.पी.श्रीनिवासन जी दीप जला रहे हैं। समीप अट्वेकेट अय्यप्पन पिल्लै, डॉ.लता, डॉ.तंकमणि अम्मा, के .रामन पिल्लै, डॉ.नायर आदि

शरत्चन्द्र फौण्डेशन ने इस वर्ष समर्थ डोक्युमेण्टेरियन श्री.वेणुकुमार को पाँच हज़ार रुपये का पुरस्कार दिया। पुरस्कार की व्यवस्था शरत्चन्द्र की बहन सुनन्दा ने की।

विश्ववेदी पत्रिका के आठवें वार्षिक समारोह में डॉ.सीमा (एम.पी.) जी डॉ.नायर को पुरस्कार देती हैं। समीप डॉ.तंपान, श्री.सुरेन्द्रन, डॉ.षाजी, श्रीकुमारन नायर आदि खडे हैं।

विश्व हिन्दी दिनाघोष में डॉ.सुशीलकुमार कोटनाल जी अपना उज्ज्वल भाषण करके श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं।

विश्व हिन्दी दिन समारोह का उद्घाटन कर रहे हैं पूर्व राजदूत श्री.टी.पी.श्रीनिवासन जी।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।